

## **Teach Yourself Samskrit**

संस्कृत-स्वाध्यायः

प्रथमा दीक्षा

# सम्भाषणम्

सम्पादकः

वेम्पिट कुदुम्बशास्त्री



याष्ट्रियभंभ्कृतभंभ्यानम् मानितिषश्यिषद्यालयः नयदेहली

### सम्भाषणम्

प्रकाशकः -

क्लसचिव:

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(मानितविश्वविद्यालय:)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल् एरिया

जनकपुरी, नवदेहली - 110 058

द्रभाष: 28524993, 28521994, 28524995, 28520977

टेलीफैक्स: 28524532, 28524387, 28520976

E-mail: rsks@nda.vsnl.net.in rskssale@yahoo.com

website: www.sanskrit.nic.in

प्रथमसंस्करणम् - जनवरी, २००२ - १,००० प्रतयः

प्रथमपुनर्मृद्रणम् - अगस्त्, २००२ - ४,००० प्रतयः

द्वितीयपूनर्मद्रणम् - अगस्त्, १००३ - १,००० प्रतयः

तृतीयपुनर्मुद्रणम् - नवम्बर, २००३ - ३०,००० प्रतयः

चतुर्थपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर, २००३ - २०,००० प्रतयः

पञ्चमपुनर्मृद्रणम् मार्च, २००४ - ५०,००० प्रतयः

षष्ठपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर्, २००७ - २०,००० प्रतयः

सप्तमपुनर्मुद्रणम् - जुलै, २००९ - ५,००० प्रतयः

अष्टमपुनर्मृद्रणम् - सितम्बर, २०१० - ५,००० प्रतयः

नवमपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर, २०११ - ७,००० प्रतयः

दशमपुनर्मद्रणम् - सितम्बर, २०१२ - १०,००० प्रतयः

© राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली

ISBN -81-86111-03-4

मूल्यम् - 200/-रूप्यकाणि (गुच्छस्य)

#### मुद्रक:

ग्राफिक् वर्ल्ड

1659-62 दखणीरायमार्गः,

दरियागञ्ज, देहली - 110 002

E-mail: graphicworld@rediffmail.com

# संस्कृतस्वाध्यायः

प्रथमा दीक्षा

सार्गंदशिवकसामितिः

प्रो० श्रीधर वसिष्ठ: श्री चमू. कृष्णशास्त्री श्रीमती शशिप्रमा गोचल डा० विश्वास: प्रो० के. वि. रामकृष्णमाचार्यः डा० चाँद किरण सलूजा श्री जनार्दन हेगडे डा० रा. देवनाथन्

सहसम्यादकाः

लित कुमार त्रिपाठी वाई.एस. रमेश: सुकान्त कुमार सेनापति: वनमाली बिश्वाल:

साहखोगिषः

चित्रकार: - कल्लोल मजूमदार चित्रसज्जाकारौ - ब्रह्म बसेटिया विजय बसेटिया

सहचित्रकार: - भास्कर सिन्हा अक्षरसंयोजक: - जवाहर लाल गुप्त

# विषयानुक्रमणी

| क्रमांक: | शीर्षकम्                         | पृष्ठ            | संख्या |
|----------|----------------------------------|------------------|--------|
| ٧.       | शाकापण:                          |                  | १      |
| 7.       | संस्कृतकक्ष्या-I                 |                  | 7-3    |
| ₹.       | गृहिण्यो: सम्भाषणम्-I            |                  | 8      |
| 8.       | गृहिण्यो: सम्भाषणम्-II           |                  | 4      |
| 4.       | माता-पुत्रयो: सम्भाषणम्-I        | 23 PT. 74 B      | ξ      |
| ξ.       | मित्राणां गृहागमनम्              | TPA D            | 5-6    |
| 9.       | अध्यापकमित्रयो: सम्भाषणम्        |                  | 9      |
| 6.       | मित्रयो: सम्भाषणम्               | THE PERSON       | १०     |
| 9.       | कुटुम्बजनाः                      |                  | ११     |
| 80.      | दूरवाण्या मित्रसम्भाषणम्         |                  | १२     |
| ११.      | अधिकारी                          | - mayo 182       | १३     |
| १२.      | पिता-पुत्रयो: सम्भाषणम्          |                  | १४     |
| १३.      | कक्ष्यायां छात्राणां सम्भाषणम्   |                  | १५     |
| १४.      | वार्षिकोत्सव:                    |                  | १६     |
| 24.      | देहलीं गमिष्याम:                 |                  | १७     |
| १६.      | संस्कृतकक्ष्या-II                |                  | १८     |
| १७.      | अनुमति:                          |                  | १९     |
| १८.      | सख्याः आगमनम्                    |                  | २०     |
| १९.      | प्रश्नोत्तरम्                    |                  | 28     |
| 70.      | बाल्यकालस्मरणम्                  |                  | 22     |
| २१.      | वार्षिकोत्सवसंरम्भः              |                  | २३     |
| २२.      | पुत्राभ्यां सह जनन्याः सम्भाषणम् | " prisami        | 28-24  |
| 73.      | मातापुत्र्योः सम्भाषणम्          | ा जाता । ११.११५३ |        |
| 28.      | शाटिका आवश्यकी                   |                  | . 20   |

## www.thearyasamaj.org

| २५. | नूतना लेखनी                |     | 25 |
|-----|----------------------------|-----|----|
| २६. | प्रीत्या व्यवहरतः          |     | 29 |
| २७. | पाठनं रोचते                |     | 30 |
| २८. | यथा वदति तथा कुर्म:        |     | 38 |
| 29. | पूजा                       |     | 37 |
| ३०. | तं जानन्ति वा भवन्तः       |     | 33 |
| ३१. | गृहिण्यो: सम्भाषणम्-III    | *   | 38 |
| ३२. | शुभयात्रा                  |     | 34 |
| ३३. | कार्यविवरणम्               |     | 38 |
| ₹४. | विवाहात्परम्               |     | 30 |
| ३५. | पदकथनक्रीडा                |     | 36 |
| ३६. | अधिकं प्राप्तवान्          |     | 39 |
| ₹७. | चित्ररचना                  |     | ४० |
| ३८. | यदि ज्वर: तर्हि गुलिके     |     | ४१ |
| ३९. | संस्कृतसम्भाषणम्           |     | ४२ |
| 80. | बेङ्गलूरुनगरे अनुभवः       |     | 83 |
| ४१. | किञ्चित् पाठयतु            |     | 88 |
| ४२. | रम्या प्रदर्शिनी           | ie. | 84 |
| ४३. | अपेक्षा: पूरियष्यित        |     | ४६ |
| 88. | शिल्पकार:                  |     | 80 |
| 84. | पीतवर्ण:                   |     | ४८ |
| ४६. | मय पति: भो:                |     | 89 |
| 86. | देहली <mark>दर्शनम्</mark> |     | 40 |
| 86. | वार्षिकोत्सववर्णनम्        |     | 48 |
| ४९. | यात्राचिटिकारक्षणम्        |     | 42 |
| 40. | परीक्षायै सज्जता           |     | 43 |
| 48. | कार्यकर्तृगृहम्            |     | 48 |
| 47. | उदरवेदना                   |     | 44 |
| 43. | यात्रावर्णनम्              |     | ५६ |
| 48. | स्वादिष्टं भोजनम्          |     | 40 |
| 44. | आम्रशलाटुकर्त्तनम्         |     | 46 |
|     |                            |     |    |

## www.thearyasamaj.org

| ५७. क्षम्यताम् ६०   ५८. पित्चयपाठः ६२-६३   ६०. क्रीडा अपि आवश्यकी ६४   ६१. मातुलः आगमिष्यित ६५   ६२. निश्चिन्ता भविष्यामि ६६   ६३. सः वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६७. कार्यक्रमः ७०   ६८. मातापुत्रयो: सम्भाषणम् ७२ | ५६. | युवकमण्डले सम्मान:     | E 6 | 49             |
|---|-----|------------------------|-----|----------------|
| ५९. परिचयपाठ: ६२-६३   ६०. क्रीडा अपि आवश्यकी ६४   ६१. मातुल: आगिमष्यित ६५   ६२. निश्चिन्ता भविष्यामि ६६   ६३. स: वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रम: ७१                            | 40. | क्षम्यताम्             |     | ६०             |
| ६०. क्रीडा अपि आवश्यकी ६४   ६१. मातुल: आगिमप्यित ६५   ६२. निश्चिन्ता भिवष्यािम ६६   ६३. स: वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रम: ७१  | 46. | मित्रसाहाय्यम्         |     | ६१             |
| ६१. मातुल: आगिमप्यित ६५   ६२. निश्चन्ता भिवष्यामि ६६   ६३. स: वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रम: ७१   | 49. | परिचयपाठ:              |     | <b>६</b> २-६३  |
| ६२. निश्चन्ता भविष्यामि ६६   ६३. स: वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रम: ७१   | ६०. | क्रीडा अपि आवश्यकी     |     | ६४             |
| ६३. स: वा? ६७   ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रम: ७१  | ६१. | मातुल: आगमिष्यति       |     | <i>ټرن</i> ر ۔ |
| ६४. लोकहितं करोतु ६८   ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रमः ७१  | ६२. | निश्चिन्ता भविष्यामि   |     | ६६             |
| ६५. मित्रयो: सम्भाषणम् ६९   ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०   ६७. कार्यक्रमः ७१   | ६३. | स: वा?                 |     | ६७             |
| ६६. जनभाषा संस्कृतम् ७०<br>६७. कार्यक्रम: ७१  | ६४. | लोकहितं करोतु          |     | ६८             |
| ६७. कार्यक्रम:  | ६५. | मित्रयो: सम्भाषणम्     |     | ६९             |
| # 10 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1  | ६६. | जनभाषा संस्कृतम्       |     | 90             |
| ६८. मातापुत्रयो: सम्भाषणम् ७२   | ६७. | कार्यक्रम:             |     | ७१             |
|   | ६८. | मातापुत्रयो: सम्भाषणम् |     | ७२             |

1

#### शाकापण:

आवश्यकम् - पर्याप्तम् मास्तु - स्वीकरोतु

आपणिकः - आगच्छतु! किम् आवश्यकम् ?

**महिला** – एतस्य कूष्माण्डस्य एककिलोपरिमितस्य कति रूप्यकाणि ?

आपणिकः - तस्य किलोपरिमितस्य अष्टरूप्यकाणि।

महिला - अर्धिकलोपरिमितम् आलुकं ददातु।

आपणिकः - कूष्माण्डः मास्तु वा ?

**महिला** – किलोद्वयमितं कूष्माण्डं, एककिलोपरिमितं गृञ्जनकम्,

अर्धिकलो महामरीचिकां च ददातु। वृन्ताकम् अपि एकिक्लोपरिमितम्। विण्डीनकानि नष्टानि खलु? उत्तमानि न

आनीतवान् किम्?

आपणिकः – उत्तमानि विण्डीनकानि स्यूते एव सन्ति। आवश्यकं किम् ?

महिला – किलोमात्रपरिमितं ददातु। आहत्य कतिरूप्यकाणि इति वदतु

शीघ्रं गन्तव्यम्।

आपणिकः - आहत्य पञ्चसप्ततिरूप्यकाणि। कारवेल्लं मास्तु वा ?

महिला - तिक्तम् इत्यतः कारवेल्लं मम गृहे न खादन्ति। पर्याप्तम्।

अस्मिन् स्यूते सर्वाणि स्थापयतु। धनं स्वीकरोतु।

आपणिकः – परिवर्तः नास्ति किम्? अस्त् स्वीकरोत्।

# संस्कृतकक्ष्या-I

एषः एतौ एते सः तौ ते त्वं युवां यूयम् अहम् आवां वयम्

आचार्यः

एष: क: ?

शिष्य:

- एषः क्म्भकारः।

आचार्यः

एष: किं करोति ?

शिष्य:

– सः घटं करोति।

आचार्यः

— सः कीदृशं घटं करोति?

शिष्य:

- सः स्थूलं घटं करोति।

आचार्यः

स: कया घटं करोति?

शिष्य:

- स: मृत्तिकया घटं करोति।

आचार्यः

- एतौ कौ?

शिष्यः

- एतौ तन्तुवायौ।

आचार्यः

एतौ किं कुरुत:?

शिष्य:

एतौ वस्त्राणि वयत:।

आचार्यः

तौ कीदृशानि वस्त्राणि वयत:?

शिष्य:

तौ अमुल्यानि वस्त्राणि वयत:।

171:-11

... - 1 & ....

आचार्यः

- तव कानि वस्त्राणि प्रियाणि?

शिष्य:

कार्पासीयानि वस्त्राणि मम प्रियाणि। मम मित्रस्य और्णं वस्त्रं

प्रियम्।

आचार्यः

एते के?

शिष्यः

एते चित्रकारा:।

आचार्यः – एते किं कुर्वन्ति?

शिष्यः - एते सुन्दराणि चित्राणि लिखन्ति।

आचार्यः - ते के?

शिष्यः - ते हरिणाः।

आचार्यः - ते किं कुर्वन्ति?

शिष्यः - ते हरितानि तृणानि खादन्ति।

आचार्यः - त्वं किं करोषि?

शिष्यः - अहं साहित्यं पठामि।

आचार्यः - युवां किं कुरुथ?

शिष्यः - आवां गीतं गायाव:।

आचार्यः - यूयम् अद्य पठितान् शब्दान् स्मरत।

शिष्याः – तथैव श्रीमन्।

# गृहिण्योः सम्भाषणम्-I

#### तृतीया विभक्तिः

शारदे। किं करोति भवती? मालती अहो मालति! आगच्छत्, उपविशत्। कुशलिनी किम्? शारदा आम्, सर्वं कुशलम्। भवती स्वकार्यं करोत्। अहं तत्रैव मालती अन्तः आगच्छामि। मम पाक: न समाप्त:। अद्य भोजनार्थं बान्धवा: आगच्छन्ति। शारदा अतः विशेषपाकः। तर्हि कि कि करोति? मालती आलकेन क्वथितं करोमि। कृष्माण्डेन तेमनं करोमि। शारदा बहु मरीचिका: सन्ति खलु? मरीचिकया किं करोति? मालती लघ मरीचिका कट्:, महामरीचिकया भर्जं करोमि। शारदा कै: व्यञ्जनं करोति? मालती विण्डीनकै: व्यञ्जनं करोमि। उर्वारुकेण 'किं करोमि' इति शारदा चिन्तयामि। उर्वारुकं गुञ्जनकं च योजयित्वा कोषम्भरीं करोतु भो:। बहु मालती स्वादिष्टं भवति। तथैव करोमि। पायसमपि करोमि। पर्पटान् अपि भर्जयामि। शारदा मम पति: बहु इच्छति। अहमपि किञ्चित् साहाय्यं करोमि। मालती मास्तु भो! भवती उपविशतु मया सह सम्भाषणं करोतु। अहं शारदा सर्वं करोमि। तर्हि अहं सर्वेषां रुचिं पश्यामि। सर्वं भवती करोतु। मालती

5

# गृहिण्योः सम्भाषणम्-II

आसीत् - आसन् आसम् - आस्म

शीला हरि: ओम् गीते! अस्ति किं गहे ? गीता ओ: शीले ! किं भो: दर्शनमेव दुर्लभम् ? कुत्र गतवती आसीत ? शीला क्त्रापि न गता अहम्। गृहे एव आसम्। पञ्चदशदिनेभ्य: बह्नि कार्याणि। भवती अपि न आगतवती खलु ? अहं, मम भगिनीपरिवार:, मम पुत्री च तिरुपतिं गतवन्त: गीता आस्म। तत्र अस्माकं गृहस्य पूजा आसीत्। तत्र तु जनानां सम्मर्दः एव आसीत्। तत्सर्वं समाप्य ह्यः एव आगताः। शीला मम गृहे पुरातनानि कानिचित् भग्नानि नष्टानि च वस्तुनि आसन्। तानि विक्रीय अन्यानि नृतनानि वस्तुनि आनीतवन्तः स्म: तदेव कार्यम। तद्दिने आपणगमनसमये मार्गे भवत्या: पुत्र: मिलितवान् आसीत्। गीता सः उक्तवान् यत् मम जनन्याः गृहे बहूनि कार्याणि इति। शीला स्वीकरोतु प्रसादम्। सुशीला अपि नास्ति नगरे इति मन्ये। गीता सा तु नगरे एव अस्ति। ह्यः मम गृहम् आगता आसीत्। शीला एवम् ! आगच्छत् सा, सम्यक् तर्जियष्यामि ताम। गीता अहम् आगच्छामि। अद्य मम गृहं प्रति मम माता आगच्छति। सा षट्दिनानि अत्रैव वासं करिष्यति। अत: सप्ताहं यावत् नागच्छामि। शीला तिष्ठतु भो:। सर्वदा भवत्या: त्वरा। किञ्चित् तिष्ठत्। नैव, भवती अन्यथा मा चिन्तयतु। आगच्छामि पुन:। गीता अस्तु, तर्हि पुनर्मिलाव:। शिला

# माता-पुत्रयोः सम्भाषणम्-I

द्वितीया विभक्तिः लोट् म०पु०एक व०

माता – गोविन्द ! किं करोषि त्वम् ?

गोविन्दः – पाठं पठामि अम्ब !

माता – वत्स ! आपणं गत्वा आगच्छिस किम् ?

गोविन्दः - अम्ब ! शीघ्रं लिखित्वा गच्छामि। किम् आनयामि ततः ?

माता – वत्स ! आपणं गत्वा लवणं, शर्करां, तण्डुलं, गुडं द्विदलञ्च

आनय।

गोविन्दः - भिगनीं वदतु अम्ब ! सा किं करोति ?

माता – सा अवकरं क्षिप्त्वा पात्रं प्रक्षालयति। द्रोण्यां जलं पूरयति।

भमिं वस्त्रेण मार्जयति। पुष्पाणि आनीय मालां करोति। एवं

तस्याः बहूनि कार्याणि सन्ति भोः।

गोविन्दः - ममापि पठनं बहु अस्ति।

माता - दशनिमेषाभ्यन्तरे आपणं गत्वा आगच्छ। अनन्तरं पाठान् पठ।

गोविन्दः - तर्हि शीघ्रं धनं स्युतं च ददातु अम्ब!

माता — आगमनसमये द्वौ कूर्चों, अग्निपेटिके, संमार्जन्यौ च आनय।

गोविन्दः - द्रौ स्यतौ ददात्, धनम् अधिकं ददात्,चाकलेहान् अपि

आनयामि....?

माता - अतः एव भवान् शीघ्रं गन्तुम् उद्युक्तः। स्वीकुरु....।

# मित्राणां गृहागमनम्

एतत् ( पुं)/स्त्री/नपुं एव/किञ्चित्

अम्ब ! मम मित्राणि आगतानि सन्ति. परिचयं कारयामि। पुत्री आगच्छत। आगतवती। सर्वेभ्यः नमस्कारः। माता पुत्री एष: रमेश:। एतस्य पिता वित्तकोषे कार्यं करोति। अत्र स्नेहा का ? माता सा नागतवती। तस्याः अम्बायाः अस्वास्थ्यम् अस्ति। एषा पुत्री दिव्या, अस्माकं गृहसमीपे एव वसित। एतस्या: अम्बाम् अहं जानामि। सा प्रतिदिनं राघवेन्द्रमन्दिरम् माता आगच्छति। पुत्री एष: आनन्द:। सर्वान् सदा आनन्दयति। कक्ष्यायाम् अपि सर्वत्र प्रथमं स्थानं प्राप्नोति। तं किरणं जानामि। किरण ! कथं मौनेन स्थितवान् भवान् ? माता मम किञ्चित् शिरोवेदना। किरण: एषा मङ्गला, एषा राधा, एषा रोहिणी, एषा कविता, सा पुत्री ज्योति:। सः कः भोः, अन्ते उपविष्टवान्। माता तस्य परिचयं वदामि, कुत: त्वरा ? स: एव अस्माकं पुत्री मुख्यशिक्षकस्य पुत्रः गोपालः, अस्माकं गणप्रमुखः। तस्य गुणकीर्तनं कर्तुम् एकं दिनं न पर्याप्तम्। अलम् अतिविस्तरेण। माता

| 8      |                        | संस्कृतस्वाध्याय:  |
|--------|------------------------|--|
| पुत्री | (4<br>( <del>1</del> ) | अम्ब ! भवती केवलं वचनेन एव मम मित्राणि प्रेषयित उत<br>किमपि खादितुं ददाति ?  |
| माता   | ;—                     | अस्तु, भवती अस्माकं गृहं दर्शयतु, तावता अहं खाद्यं<br>सज्जीकरिष्यामि।  |
| पुत्री |                        | मित्राणि ! एषा मम माता अन्नपूर्णा। साक्षात् अन्नपूर्णेश्वरी। आगच्छन्तु, गृहं सर्वं दर्शयामि। एष: मम अध्ययनप्रकोष्ठ:, एषा पाकशाला, दूरत: एव पश्यन्तु, यत: अन्त: प्रवेश: अनुमितं विना नास्ति। एतत् प्रार्थनामिन्दरम्। वयं सर्वे प्रात: सायं च मिलित्वा प्रार्थनां कुर्म:। एष: विशाल: सभामण्डप:। अत्रैव विशेषदिनेषु कार्यक्रम: भवित। एवम् अस्माकं लघु गृहं, सुव्यवस्थितगृहम्। आगच्छन्तु उपाहारं स्वीकुर्म:। |

9

प्रथमा दीक्षा : सम्भाषणम्

## अध्यापकमित्रयोः सम्भाषणम्

एतौ - एते एते - एताः ते - ताः तौ - ते

प्रमोदः - नमस्ते श्रीकान्त ! आगच्छत् उपविशत्।

श्रीकान्तः - संस्कृतपाठ: प्रचलति किम् ? एता: किं कुर्वन्ति ?

प्रमोदः - एताः चित्रं दृष्ट्वा प्रश्नान् लिखन्ति। ते अर्धकथां पूर्णां कुर्वन्ति।

श्रीकान्तः - एतौ कौ ?

प्रमोदः - एतौ मम साहाय्यं कुरुतः। एते बालिके सुन्दरतया लिखतः।

श्रीकान्तः - भोः बालकाः, सुन्दरं लिखन्तु। त्वरा मास्तु।

प्रमोदः - ते चित्रं दृष्ट्वा सम्भाषणं लिखत:। तौ एकां कथां लिखत:।

ताः बालिकाः पदबन्धान् रचयन्ति। एते बालकाः प्रश्नानाम्

उत्तराणि लिखन्ति।

श्रीकान्तः - अन्ते उपविष्टवन्तौ तौ किं कुरुतः ? युवां किं कुरुथः ?

छात्रौ – आवां चित्रे वर्णं योजयाव:।

प्रमोद - भो: छात्रा: ! यूयं शीघ्रं समापयथ। इदानीं क्रीडा अस्ति।

छात्राः - वयं शीघ्रं-शीघ्रं लिखाम: आचार्य!

## मित्रयोः सम्भाषणम्

सह-विना

शिशिर: - अखिल ! कोऽपि नास्ति किं गृहे ?

अखिलः – अहम् एकः एव अस्मि। पिता अम्बया सह सङ्गीतकार्यक्रमं गतवान्। अग्रजा अरुणया सह चित्रमन्दिरं गतवती। अनुजः

बालै: सह कीड़ित।

शिशिरः - भवन्तं विना सर्वेऽपि गतवन्तः। भवान् मया सह आगच्छतु।

मम माता आपणं गत्वा पुष्पाणि आनयतु इति उक्तवती। अहं

स्यूतेन विना एव आगतवान्।

अखिलः – चिन्ता मास्तु। अहं स्यूतं ददामि। धनेन विना आगतम् वा इति

पश्यतु।

शिशिरः - तिष्ठतु। प्रथमं धनमस्ति वा इति पश्यामि। किञ्चित् जलं

ददातु भो:।

अखिलः - स्वीकरोतु, तिष्ठतु काफीं करोमि। भवान् शर्करया विना काफीं

पिबति उत शर्करया सह ?

शिशिर: - अहं शर्करया सह एव पिबामि। किन्तु मास्तु, इदानीं भवत:

किमर्थं क्लेश: ?

अखिलः – क्लेश: नास्ति। ममापि काफीसमय: एष:, तिष्ठत्, मया सह

काफीं पिबत्।

### कुटुम्बजनाः

#### लोट्,-सम्बोधनप्रथमा

राधे ! पुनीत ! शीघ्रम् उत्तिष्ठताम्। माता अम्ब ! किमर्थं शीघ्रम् ? अद्य रविवासर: खल् ? गधा शीघ्रं दन्तधावनं कुरुताम्। स्नानमपि समापयताम्। अद्य जनकस्य माता जन्मदिनम। पुनीत: अम्ब । कः उपाहारः ? अद्य उपाहार: अनन्तरम्। प्रथमं सर्वे देवालयं गच्छाम। माता पुनीत: अम्ब उष्णं जलं सज्जीकरोत्। अहं स्नानं करोमि। निलिनि ! क्षीरार्थं पात्रम् आनयत्। शीघ्रं काफी करोतु। पिता भो । वार्तापत्रिकाम अनन्तरं पठत्। शीघ्रं सिद्धः भवत्। माता अम्ब ! महती बुभुक्षा। क्षीरं ददातु। राधा वत्से ! क्षीरं स्वीक्रा तदनन्तरं नूतनवस्त्रं धर। माता अम्ब ! ममापि नृतनवस्त्रं ददातु। पनीतः निलिनि ! पुजार्थं सर्वं स्वीकरोत्। गच्छाम वा? पिता पनीत ! राधे ! द्वौ अपि देवं नमस्करुताम्। भो: ! आगच्छत् ! माता आवां तत्र गच्छाव। तात ! घण्टा उपरि अस्ति। अहं कथं वादयामि ? राधा किञ्चित् कूर्दनं कुरु। पुनीत: पुनीत ! त्वं चेष्टां मा कुरु। सा रोदिति। माता भो: अर्चक ! एकाम् अर्चनां करोत्। पिता भवान् एव प्रसादं स्वीकरोत्। माता पुजा समाप्ता। आगच्छन्तु गच्छाम। पिता

# दूरवाण्या मित्रसम्भाषणम्

वर्तमाने लट्

गिरीश: - हरि: ओम्।

अनन्तः – हरिओम्। कः वदति?

गिरीश: - अहं गिरीश: वदामि। मित्र ! गृहे कोऽपि नास्ति किम ?

अनन्तः – सर्वे सन्ति। पिता जपित। अम्बा पुजयित। अनुजः खादित।

अग्रजा मालां करोति। पितामह: दुरदर्शनं पश्यति। पितामही

स्नानं करोति।

गिरीश: - त्वं किं करोषि ? क्रीडिस वा ?

अनन्तः – अहं पठामि। उत्तरं लिखामि। तव अनुजौ किं करुत: ?

गिरीशः - मम अनुजौ शालां गच्छत:। अहं पिता च विद्यालयं गच्छाव:।

अनन्तः – अद्य त्वमपि विद्यालयं न गच्छ? अहमपि न गच्छामि। वयं

सर्वे अद्य मैसूरुनगरं गच्छाम:। मम बान्धवा: अपि

आगच्छन्ति।

गिरीश: - भवत: पिता कार्यालयं न गच्छति किम् ?

अनन्तः – अद्य मम पिता विरामं स्वीकरोति।

**गिरीशः** – अनन्तः निह भोः। अहम् आगन्त्ं न शक्नोमि। भवान् गच्छत्।

अनन्तः – पुनः मिलामः, धन्यवादः।

## अधिकारी

अद्य∕ह्यः भूते क्तवतु

अधिकारी - सुधाकर ! शीघ्रं लिपिकारम् आह्वयत्।

सुधाकरः – अद्य लिपिकार: नागतवान्। 'स: हरिद्वारं गतवान्' इति।

अधिकारी - ह्यः वित्तकोषतः धनम् आनीतवान् किम् ?

स्थाकरः - आम्। ह्यः अहं रमेशः च वित्तकोषं गतवन्तौ। धनम् आनीतवन्तौ

अपि।

अधिकारी – ह्यः सर्वे किं कि कार्यं कृतवन्तः ?

स्थाकरः - ह्यः रामगोपालः गणनां समापितवान् 'गीता पत्राणि लिखितवती'

गौरीश: कार्याणि परिशीलितवान्। ह्य: चन्नम्मा नागतवती।

मुकुन्दः स्वच्छीकृतवान्।

अधिकारी – चन्नम्मा कृत्र गतवती इति किं कोऽपि जानाति ?

सुधाकरः – चन्नम्मा तीव्रम् अस्वस्था इति शृणुम:।

अधिकारी - सा औषधं स्वीकृतवती स्यात खल्?

सुधाकरः - वैद्यः सूच्यौषधं दत्तवान् इति श्रुतम्। ह्यः निवेदिता- विद्यालयस्य

शिक्षिकाः आगतवत्यः। भवान् न आसीत्। अतः एकं पत्रं

दत्तवत्य:।

अधिकारी – प्राचार्या मुख्याध्यापिका च किम् आगतवत्यौ ?

स्थाकरः – नैव, केवलं प्राचार्या आगतवती। 'भवान् दूरवाणीं करोत्' इति

उक्तवती।

अधिकारी - भवतु, भवान् गच्छतु।

# पिता-पुत्रयोः सम्भाषणम्

सप्तमीविभक्तिः भूते क्तवतु

पिता - आगच्छत्। यात्रा कथम् आसीत्?

शिवरामः - सम्यक् आसीत् तात !

**पिता** – भवान कदा मुम्बईं प्राप्तवान ?

शिवरामः - अहं सोमवासरे प्रातः ७ वादने एव प्राप्तवान।

पिता – अनन्तरं भवान किं किं कृतवान ?

शिवरामः – ततः मित्रस्य गृहं गतवान्। तत्रैव स्नानमपि कृतवान्। उपहारं

खादितवान्। ततः क्वेम्पु मन्दिरं गतवान्।

पिता – किं भवान एक: एव गतवान ?

शिवरामः – नैव, मम मित्रम् अहं च गतवन्तौ। कार्यक्रमः न आरब्धः

आसीत्। समये आवां प्राप्तवन्तौं।

**पिता** – तदनन्तरम्....?

शिवरामः - कार्यक्रमः दशवादने आरब्धः। श्यामला प्रार्थनां गीतवती।

स्वागतानन्तरं मम भाषणम् आसीत्। अहं भाषणं कृतवान्। अध्यक्षः मां श्लाघितवान्। जनाः उच्चैः हर्षोद्गारं कृतवन्तः। करताडनमपि कृतवन्तः। अधिकारी आगामिवर्षे अपि सम्मेलनं प्रति आगमनाय प्रार्थितवान्। ११:३० वादने कार्यक्रमः समाप्तः।

अन्ते महिला: 'वन्दे मातरं' गीतवत्य:।

पिता – पुन: मित्रस्य गृहं किं न भवान् गतवान् ?

शिवरामः – कुवेम्पुमन्दिरतः तस्य गृहं बहु दूरे अस्ति। अतः अहं साक्षात्

याननिस्थानकं गतवान्। तत्र मम वयस्यौ मिलितवन्तौ। बहुकालं वयं सम्भाषणं कृतवन्तः ततः मध्याह्ने ३वादने अहं प्रस्थितवान्।

पिता - अस्तु ! स्नानं करोतु ! भोजनं करोतु ! कञ्चित्कालं विश्राम

स्वीकरोत्।

शिवरामः - अस्तु ! तात।

## कक्ष्यायां छात्राणां सम्भाषणम्

श्वः/परश्वः लृट्

प्रदीपः - अरुण ! भवत: गणितपुस्तकं ददाति किम् ?

अरुण: - भवान् किमर्थं विद्यालयं नागतवान ?

प्रदीपः - मम अतीव शिरोवेदना आसीत्। अत: शयनं कृतवान्।

अरुणः – इतिहासपुस्तकं भवान् इतोऽपि न दत्तवान्। इदानीं गणितपुस्तकमपि

नयति। कदा प्रतिददाति ?

प्रदीपः - श्वः सायङ्काले भवतः पुस्तकं दास्यामि।

**ज्योति:** – प्रदीप ! भवान् असत्यं वदति किम् ? श्व: भवान् बन्धुगृहं

गमिष्यति। परश्व: आगमिष्यति। कदा गणितं लेखिष्यति ?

प्रदीपः - अहं विस्मृतवान्। परश्वः निश्चयेन पुस्तकं दास्यामि।

कृष्णः - ज्योति ! अद्य मम गृहम् आगच्छतु। सम्यक् पठिष्याव:।

अरुण: – भवान् पठिष्यति, लेखिष्यति इति वदति केवलम्।

कृष्णः - माला शिक्षिका श्व: संस्कृतपाठं लेखिष्यति। द्वितीयपाठस्य

प्रश्नान् प्रक्ष्यति। रिक्तस्थानानि पूरयन्तु इति दास्यति। अत:

बह पठिष्यामि।

अरुणः - भवन्तः मम गृहम् आगच्छन्तु। सर्वे मिलित्वा पठिष्यामः।

**ज्योतिः** – भवन्तौ द्वौ अपि मिलतः चेत् न पठिष्यतः, युद्धं करिष्यतः।

अत: स्वगृहे एव पठन्तु।

### वार्षिकोत्सवः

अस्ति स्तः सन्ति असि स्थः स्थ अस्मि स्वः स्मः

अम्ब ! महती बुभुक्षा अस्ति। पुत्री सधे ! किमर्थं त्वरा ? माता मम विद्यालये वार्षिकोत्सव: अस्ति। तत्र नाटकं, गीतं, नृत्यं, पुत्री भाषणम इत्यादि कार्यक्रमाः सन्ति। भवती वार्षिकोत्सवे किं करोति ? माता वृन्दगाने अहम् अस्मि। मम सखी नृत्ये अस्ति। बालका: पुत्री केवलं नाटके सन्ति। वयं बालिका: पुन: यष्टिक्रीडायाम् अपि स्मः। द्रौ बालकौ विनोदनाटके स्तः। निपुणा खलु मम पुत्री। माता सुधे ! कुत्र असि ? सखी पुत्री अत्र अस्मि। किम् वदत्। भवती अद्य कदा विद्यालयं गच्छति। मखी किमर्थम ? भवती अपि आगच्छति वा ? पत्री यवां मिलित्वा कस्मिन्नपि कार्यक्रमे न स्थः वा ? माता आवां द्वे अपि वृन्दगाने यष्टिक्रीडायाम् च स्व:। पुत्री पुत्रि ! किं कुर्वन्ति मिलित्वा ? पिता अद्य प्रत्याः विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। वयं शीघ्रं गत्वा माता प्रत: उपविशाम:।

17

प्रथमा दीक्षा : सम्भाषणम्

# देहलीं गमिष्यामः

भविष्यत्

गिरिजा विरामसमये कत्रापि प्रवासं करिष्यामः। पति · आगामिसप्ताहे मम कार्यालयतः पञ्चजनाः नवदेहलीं गमिष्यन्ति इति श्रयते। वयमपि तै: सह गमिष्याम:। गिरिजा देहल्यां कृत्र वासं करिष्याम: ? ते सर्वेऽपि धर्मशालायां वासं करिष्यन्ति। भोजनम् उपाहारमन्दिरे पतिः करिष्याम:। तात ! श्व: आरभ्य मासं यावत् विराम: अस्ति। वयमपि अजित: प्रवासार्थं गमिष्यामः। पति: आगामिसप्ताहे प्रवास: भविष्यति। चिन्ता मास्त। पुत्रौ उष्णजलं पास्यत:। तत् कथं नेष्याम:। माता पिता समीचीनं जलं मार्गे अपि भविष्यति, तत् वयं क्रेष्याम:। खाद्यानि वयं प्रथमम् एव क्रेष्यामः। देहल्याम् अतिशैत्यम्। माता अतः अधिकानि वस्त्राणि स्वीकरोत्। पुत्री तत्र गन्तुं कः चिटिकाः क्रेष्यति ? पिता अहं चिटिकाः आनेष्यामि। पुत्री अग्रज ! त्वं कृत्र उपवेक्ष्यसि ? अजित अहं वातायनपार्श्वे उपवेक्ष्यामि। युवां मम पार्श्वे उपवेक्ष्यथः। गमनसमये निद्रां करिष्यथः। माता पुत्री एवं समीचीनम्। तथैव उपवेक्ष्याव:।

# संस्कृतकक्ष्या-II

चतुर्थी

छात्राः – अहो ! किम् अद्य कक्ष्यायां बहूनि चित्राणि सन्ति। गजाः सन्ति। वृषभाः सन्ति। वृक्षाः सन्ति। पर्वताः सन्ति। फलानि

सन्ति। पुष्पाणि सन्ति। नद्यः सन्ति। बालिकाः नृत्यन्ति।

आचार्या - सर्वे आगतवन्तो वा ?

छात्राः – आम् सर्वे आगतवन्तः।

आचार्या – अद्य एतानि चित्राणि सन्ति खलु। अहं सर्वेभ्य: ददामि। यस्य नाम वदामि स: उत्तिष्ठतु। फलचित्रं प्रभाकराय ददामि। नदीचित्रं लतायै ददामि। वृक्षचित्रं एतस्मै बालकाय ददामि। पर्वतचित्रं

भारत्यै ददामि।

रञ्जिता – मान्ये ! मह्यं गजिचत्रं ददातु।

दिनेशः - तस्यै वृषभचित्रं ददातु। गणेश ! तुभ्यं बालिकाचित्रं आचार्या दत्तवती वा ? मान्ये ! मह्यं फलचित्रं मास्तु फलमेव ददातु।

आचार्या – चित्रायै किमपि न ददामि। सा कोलाहलं करोति।

चित्रा - अहं कोलाहलं न करोमि।

आचार्या – अस्तु ! स्वीकरोतु। भवन्त: सर्वे स्व-स्व चित्राणि पश्यन्तु। पञ्च-पञ्च वाक्यानि संस्कृत भाषया लिखन्तु।

19

# अनुमतिः

#### सप्तमी/तसिल्

प्रकाशः - अम्ब ! मम विद्यालये प्रवासः अस्ति। १५० रूप्यकाणि एकस्य। अहम् अपि गच्छामि वा ?

माता – अहं कथं वदामि ? पिता खलु धनं ददाति ?

प्रकाशः – भवती एव वदतु तातम्।

माता – कुत्र प्रवास: ?

प्रकाशः – प्रथमं विद्यालयतः पक्षिधाम गत्वा वस्तुप्रदर्शनालयं गच्छन्ति। तत्रैव उपाहारं खादित्वा उद्यानं गच्छन्ति। उद्याने क्रीडित्वा

तत्रव उपाहार खादित्वा उद्यान गच्छान्त। उद्यान क्राडित्वा मन्दिरं गच्छन्ति। मन्दिरे श्लोकम् उक्त्वा भोजनालयं गच्छन्ति।

माता – कति छात्राः गच्छन्ति भोः ?

प्रकाशः - मम कक्ष्यायां सर्वेऽपि गच्छन्ति। ते सर्वे धनमपि दत्तवन्तः।

इतः परम् अहम् एकाकी तातं पृष्ट्वा धनं ददामि।

माता - श्व: एव तातं पृष्ट्वा, धनं नयत्।

प्रकाशः - अम्बायाः अनुमितः प्राप्ता। अर्धं कार्यं समाप्तम्।

पिता - वत्स ! कस्मिन् विषये अनुमितः ?

प्रकाशः – तात ! मम विद्यालये प्रवासार्थं पक्षिधाम गच्छन्ति। अत: १५०

रुप्यकाणि एकस्य।

पिता - सर्वे गच्छन्ति खलु। सर्वै: सह मिलित्वा गच्छतु। वस्तुप्रदर्शनालयं

सम्यक् पश्यतु।

प्रकाशः – धन्यवादः तात ! श्वः धनं नेष्यामि।

#### सख्याः आगमनम्

किं, कदा, कुत्र? कुत: कथम्? किमर्थम् कति?

अहो ! चिरात् दर्शनम् ? आगच्छतु उपविशतु। सुनीता किं भगिनि ! बहुदिनेभ्य: आगच्छामि इति चिन्तितवती। रघुवीर: सुशीला नास्ति किम् ? वाणी अपि आगतवती किम्? कुशलं वा ? पातुं किं ददामि ? सुनीता मास्त भगिनि ! विवाहगृहात् आगतवती अहम्। कथमस्ति स्रशीला भवत्याः स्वास्थ्यम ? सुनीता चिन्ता नास्ति। इदानीं किञ्चित् उत्तमम् अस्ति। रघुवीर: कदा आगतवती भवती ? वाणी कुशलिनी वा ? दशनिमेषेभ्यः पूर्वम् आगतवती। वाणी कुशलिनी अस्ति। भवान् सुशीला कृत: आगतवान् ? अद्य अस्माकं कार्यालये कश्चन कार्यक्रमः आसीत्। ततः रघुवीर: आगतवान् किम् आदित्यः नागतवान् ? कुत्र गतवान् ? सः किञ्चित् विलम्बेन आगच्छति। तस्य कार्यालयकार्यं बहु सुशीला अस्ति इति। सुनीता भगिनि ! भवती पुजादिने किमर्थं नागतवती ? सुशीला तस्मिन् दिने पुत्र्याः बहु अस्वास्थ्यम् आसीत्। अतः नागतवती। तिहने कति जनाः आगतवन्तः ? सुनीता प्राय: ३० जना: आगतवन्त:। सुनीते ! केवलं वचनेन एव समापयित उत किञ्चित् किमपि रघुवीर: ददाति ? अहम् इदानीमेव आनयामि। भवन्तः सम्भाषणं कूर्वन्त्। सुनीता

# प्रश्नोत्तरम्

लोट्

निलिनि ! अद्य भवत्या: सख्य: सन्ति खलु। अहं प्रश्नान् पिता पुच्छामि। भवत्य: उत्तरं वदन्तु। निलनी भवान् कष्टकरं प्रश्नं मा पुच्छत्। भो: आगच्छन्त्। वयमेव जयं प्राप्नुम:। तात ! अन्ते उपायनं किमपि ददात। प्रथम: प्रश्न:-अहं कन्दुकम् उपरिक्षिपामि। किमर्थं स: अध: पिता पतित ? माया वदत। कन्दुकं ग्रहणार्थं तत्र कोऽपि नास्ति। अतः अधः पति। माया पिता समीचीनम्; रामः कृष्णस्य अनुजः। कृष्णस्य पिता शिवः रामस्य पिता क: ? गिरिजा वदत। अहो तावदिप न जानाति वा ? रामस्य पिता दशरथ:। गिरिजा असमीचीनम्। एतस्य अङ्कः नास्ति। पिता निलनी किमर्थं तात । पिता अहो ! अहमिदानीं रामायणस्य राम विषये न पृष्टवान्। स्मरति ? भवत अन्य: प्रश्न:। स्पर्धाया: अन्ते क: कार्यक्रम: अस्ति ? अथवा स्पर्धायाः अन्ते कः किं ददाति ? एतस्य उत्तरं निलन्याः पिता एव जानाति। माया कः अर्थः ? विस्तरेण वदत्। पिता निलनी एषा अपि स्पर्धा न वा ? भवान् किं ददाति ? भवान् निलन्याः पिता अस्ति। भवान् एव सुन्दरं उपायनं माया दास्यति। या पञ्चप्रश्नानामुत्तरं सम्यक् विद्रष्यित तस्यै अहम् एकां सुन्दरीं पिता पाञ्चलिकां दास्यामि।

#### बाल्यकालस्मरणम्

स्म

विजयः - विनय! सप्ताहात् पूर्व परीक्षिताचार्यः स्वर्गस्थः इति वार्ता।

विनयः - एवं वा ? बहु वृद्धः आसीत् सः। बहु शास्त्राणि जानाति स्म।

सम्यक पाठयति स्म आचार्यः।

विजयः - किन्तु भवान् तु न पठित स्म।

विनयः - तदा तु बाल्ये वयं विद्यालयं न गच्छामः स्म। त्वमपि आम्रफलं

खादिस स्म सदा। मम मित्राणि अपि अटिन्त स्म।

विजयः - सत्यम्। मम गृहे अपि भगिन्यौ अम्बां वदतः स्म। माता

तर्जयित स्म। पिता तु कोपेन ताडयित स्म।

विनयः – किन्तु मम गृहे बहु न तर्जयन्ति स्म। अहं तु रात्रौ पठामि

स्म। प्रथमां श्रेणीं प्राप्नोमि स्म।

विजय: - विनय ! ते प्रियङ्गा मालविका च सदा कलहं कुरुत: स्म।

स्मरित वा ? बह विनोद: भवति स्म।

विनयः - एवम्, आवां ते द्वे अपि पीडयावः स्म। ते द्वे रोदनं कुरुतः

स्म।

विजयः - भो: इदानीं पठाव:, श्व: एव परीक्षा। बाल्यकालस्य दिनानि

अतिमधुराणि। सर्वदा स्मरणयोग्यानि।

## वार्षिकोत्सवसंरम्भः

#### च, भविष्यत्, एव

आचार्यः – श्वः वार्षिकोत्सवः भविष्यति खलु ? तन्निमत्तं सर्वसज्जताः

अभवन् किम् ? भवान् वदतु विजय ! क: क: किं किं

करिष्यति इति ?

विजयः - शङ्करः, राकेशः, विशाखः च सभायाः अलङ्कारं करिष्यन्ति।

अमर: प्राणेश: च आसनव्यवस्थां द्रक्ष्यत:।

आचार्यः - मण्डपस्य अलङ्कारं के करिष्यन्ति ?

विजयः - उषा, तस्या सख्यः च मण्डपालङ्कारं करिष्यन्ति।

आचार्यः - दीपालङ्कारं के करिष्यन्ति ?

विजयः - नन्दीशः इत्यादयः दीपालङ्कारं करिष्यन्ति।

आचार्यः - मुख्यातिथिं कः आनेष्यति ?

विजयः - मुख्यातिथिम् अहमेव आनेष्यामि। मुरलि: तं प्रेषयिष्यति।

आचार्यः - अध्यक्षः स्वयमेव आगमिष्यति, उत कोऽपि तम् आनेष्यति ?

विजयः - अध्यक्षः स्वयमेव आगमिष्यति। प्रार्थनां रमा उषा च गास्यतः।

मालार्पणम् अहं मुरलि: च करिष्याव:।

आचार्यः - श्वः कार्यक्रमः व्यवस्थितं यथा स्यात् तथा त्वं परिशीलियष्यसि

ननु ?

विजयः - तत्र सन्देहः एव मास्तु। वयं सर्वे सम्यक् कार्यक्रमं करिष्यामः।

आचार्यः – तर्हि श्व: मेलिष्यामि। अहं शीघ्रम् आगमिष्यामि।

# पुत्राभ्यां सह जनन्याः सम्भाषणम्

### चतुर्थी ⁄ तुमुन्

अम्ब ! कोऽपि भिक्षुक: आगतवान्। पत्र: भवान एव तस्मै एकं नाणकं ददात। माता अहं पठामि भो: भवती एव भिक्षकाय ददात्। पत्र: भवते कार्यं न रोचते। अहमेव करोमि सर्वं कार्यम। माता भिक्षक: नाणकं नेच्छति। ओदनम् इच्छति। पत्र: अहं भिक्षकाय ददामि। भवान जलं पुरयत्। माता जलं परयामि। खादितं मह्यमपि किमपि ददात्। पत्र: भवते भोजनमेव ददामि। पञ्चनिमेषान तिष्ठत। माता भोजनम् अनन्तरम। प्रातः भगिन्यै भवती यत् दत्तवती तत् पत्र: मह्यम अपि ददात्। भवान केवलं खादति, न पठित, न वा कार्यं करोति। माता अम्ब ! भवती भोजनं कृत्वा कृत्र गच्छति ? प्त्र: अहं सार्वजनिक पुस्तकालयं गच्छामि। माता अम्ब ! माम् अपि पुस्तकालयं नयत्। अहं द्रष्ट्रम् इच्छामि। दीप्तिः अस्तु अद्य दशवादने गच्छाम:। माता अम्ब ! एतानि पुस्तकानि किमर्थम् अत्र स्थापितवन्तः ? दीप्तिः केचन पुस्तकानि द्रष्ट्म इच्छन्ति। केचन क्रेतुम् इच्छन्ति। क्रेतुं माता ये इच्छन्ति ते केवलं बहि: पुस्तकानि पश्यन्ति। प्रबन्धं लेखितुम् अपि इत: पुस्तकानि नयन्ति किम् ? दीप्ति: अत्र सर्वविधानि अपि पुस्तकानि भवन्ति। कंचन कथापुस्तकं माता

पठितुम् इच्छन्ति। केचन भाषणं सज्जीकर्तुम् इच्छन्ति। अन्ये केचन बालकेभ्यः सङ्ग्रहीतुं शक्नुवन्ति। अतः सर्वाणि अपि पथक् स्थापयन्ति।

दीप्तः - अत्र पुस्तकानि स्वीकर्तुं किम् सदस्याः आगच्छन्ति ?

**माता** – आम् ! अत्र सा व्यवस्था समीचीना अस्ति। नूतनानि स्वीकर्तुं पुरातनानि पुस्तकानि प्रत्यर्पयितुं सदस्याः आगच्छन्ति।

दीप्तः - तर्हि वयं सख्यः मिलित्वा अत्र आगच्छामः। अधिकान् विषयान्

सङ्ग्रहीतुं शक्नुम:।

माता – अनुजमपि आनयतु। सोऽपि पुस्तकपठनाभ्यासं करिष्यति।

# मातापुत्र्योः सम्भाषणम्

## भूतकृदन्त-एकवचनरूपाणि (स्त्री०)

विजया अम्ब ! अहम् आगतवती। विजये किमर्थं विलम्बः ? अम्बा अद्य विद्यालये कोऽपि कार्यक्रमः आसीत। तत्र भागं स्वीकृतवती। विजया भवती किं कतवती ? अम्बा अहं गीतं गीतवती। विजया एवं.... ? अध्यापिका किम उक्तवती ? अम्बा अध्यापिका सर्वान् श्लाघितवती। किन्तु राधा कोलाहलं कृतवती। विजया ताम एका तर्जितवती। सा रुदितवती। अनन्तरम .....। अम्बा परह्य: स्पर्धा आसीत् किल? तत्र निलनी जयं प्राप्तवती। विजया मख्याध्यापिका पारितोषिकं दत्तवती। वय तत् दृष्टवत्य:। भवत्, किमर्थं विलम्बः ? तत् न उक्तवती। अम्बा अहं तावत्पर्यन्तं घटीमेव न दुष्टवती। समयमेव न ज्ञातवती। विजया अतः विलम्बः। भवत् अहम् अद्य मध्रं कृतवती। ददामि, भवती खादत्। अम्बा

## शाटिका आवश्यकी

वर्णाः

सुबोधा ममते ! किं करोति भवती? आगच्छति किम्? कत्र गच्छसि? ममता सबोधा एका शाटिका आवश्यकी। भवती अपि आगच्छत्। आपणं गच्छाव ।। किञ्चित तिष्ठत्। आगच्छामि। ममता सबोधा मम मातुलस्य विवाह: अस्ति। अत: नृतनां शाटिकां क्रीणामि। भवती कं वर्णम् इच्छति। भवत्याः नीलः वर्णः युज्यते। ममता नैव। नीलवर्णस्य हरितवर्णस्य च शाटिका मम समीपे अस्ति। सबोधा पाटलवर्णस्य पीतवर्णस्य वा इच्छामि। पश्याम:। तत्र। कति रूप्यकाणां शाटिकां स्वीकरोति भवती? ममता सामान्यतः ३०० रूप्यकाणाम्। ततोऽपि अधिकमुल्यस्य मास्तु। सबोधा मम माता मम निमित्तम् एकाम् आनयति। सा श्वेतकृष्णवर्णयो: मिश्रिताम् एकां शाटिकां स्वीकृतवती। भवत्या: रक्तवर्णस्य शाटिका बहु उत्तमा अस्ति भो:। ममता किन्तु अहं तां न इच्छामि। अहं हरितवर्णस्य शाटिकां बहु सुबोधा इच्छामि। अस्तु आपणे याम् इच्छति तां स्वीकरोतु। ममता

# नूतना लेखनी

किं कति कुतः किमर्थम्

राकेशः – किं भो:, नृतना लेखनी वा ? कृत: आनीतवान् ?

श्रीशः - मम अग्रजः 'न्यूयार्कतः' आनीतवान्।

राकेशः – वेङ्कटेशः आगतवान् आसीत् किम् ? भवान् किमर्थं तं मम

गृहं न आनीतवान् ?

श्रीष्ठाः – तस्य समयः एवं नास्ति भोः। सः श्वः प्रातः गमिष्यति।

राकेशः – भवान् ह्यः किमर्थं विद्यालयं न आगतवान् ?

श्रीशः – ह्यः आवां द्वौ अपि नगरं गतवन्तौ। ततः बहूनि वस्तुनि

आनीतवन्तौ। पश्यतु, एषा पेटिका अपि नृतना।

राकेशः – बहु सम्यक् अस्ति। एतस्याः कति रूप्यकाणि ?

श्रीश: - प्राय: ६५ रूप्यकाणि दत्तवान् इति चिन्तयामि।

राकेशः – श्वः मम गृहं प्रति लखनऊतः बान्धवाः आगमिष्यन्ति। एकः

विवाह: अस्ति। तत्र सर्वे गच्छन्ति।

श्रीश: - तर्हि श्व: भवान् विद्यालयं नागमिष्यति नन् ?

राकेशः – अहं विवाहे न गच्छामि। लेखनं बहु अस्ति। अतः गृहे एव

भविष्यामि। नृतनया लेखन्या लेखिष्यामि।

29

## प्रीत्या व्यवहरतः

तृतीया/लोट्

आदित्यः - अचिन्त्य ! भवान् तत् पुस्तकम् आनयतु।

अचिन्त्यः - अहं न आनयामि। आवश्यकं चेत् नयतु।

आदित्यः - भो:, भवान् कदा सन्तोषेण वदति ? सदा कोपं करोति।

अचिन्त्यः - त्वमपि कदापि प्रीत्या न वदसि। आदेशं करोषि।

आदित्यः - सदा श्रद्धया कार्यं करोतु। विनयेन सम्भाषणं करोतु।

अचिन्त्यः - गच्छ त्वम्। सदा उपदेशं करोषि।

माता - किमर्थं कोपेन कलहं कुरुत: ? भवन्तौ सहोदरौ खलु ?

आदित्य ! त्वं कोपेन मा तर्जय, स: दु:खेन रोदिति। कदा

प्रीत्या व्यवहरत:।

आदित्यः - अम्ब ! क्षम्यताम्। इतः परं सन्तोषेण एव भवावः।

अचिन्त्यः – अम्ब ! अद्य मम विद्यालये एक: बालक: भयेन आक्रोशं

कृतवान्। शिक्षिका प्रीत्या सान्त्वनां कृतवती। अनन्तरं स:

आनन्देन, निर्भयेन पठितवान्।

माता – अस्तु, भवन्तौ अपि एकाग्रचित्ततया पठताम्, भक्त्या

नमस्कारं कुरुताम्, परिश्रमेण उत्तम-अङ्कं प्राप्नुवताम्। तदा

अहमपि सन्तोषेण भवामि।

आदित्यः - अस्तु अम्ब ! तथैव कुर्व:।

शिक्षिका

### पाठनं रोचते

### ( रोचते:-चतुर्थी)

मनोरमा शिक्षिकाया: आगमनपर्यन्तं किञ्चित पाठविषये एव चिन्तयाम:। वदन्त कस्मै/कस्यै किं रोचते ? इति। मह्यं फलं रोचते। लता वदत भो:। शकुन्तला रागिणी मह्मम् आनन्दस्य नृत्यं रोचते। तृभ्यं किं रोचते वदत् कार्तिक ! कार्तिक • कार्तिकाय नाटकवीक्षणं रोचते। मालत्यै सर्वदा निद्रा रोचते। न वा मालति ? प्रशान्तः मह्यं संस्कृतगीतं रोचते। भो: आर्ये ! भवत्यै किं रोचते इति चडामणिः प्रथमं वदत। मनोरमा एतस्यै किं रोचते इति कृतृहलं वा ? शुण्वन्त, मह्यं भाषणं रोचते। न सर्वे मौनेन उपविशन्तु। शिक्षिका आगतवती। चेतन: आगच्छत् तस्यै किं रोचते इति पुच्छाम:। मान्य ! भवत्यै किं मदन: रोचते इति वदति वा ?

मह्यं भवतां पाठनं रोचते।

31

## यथा वदति तथा कुर्मः

द्वितीया

अध्यापकः - अखिलभारत-शिक्षक-सम्मेलनं भविष्यति। तत्र मनोरञ्जन

कार्यक्रमान् कर्तुम् अवसरः अस्ति।

दीपकः – तर्हि वयम् एकं लघुनाटकं कुर्म:।

अर्चना - वयं सामूहिकगीतं गायाम:।

अरुणः - अहम् एकपात्राभिनयं करोमि।

चेतनः - प्रदर्शिनी-आयोजनम् अस्ति वा?

अध्यापकः - महती प्रदर्शिनी भविष्यति। के तस्य कार्यं कुर्वन्ति?

अरविन्दः – वयं प्रदर्शिनीकार्यं कुर्मः। नूतनानि फलकानि लिखामः। बहूनि

वस्तूनि सङ्गृह्णीमः। यन्त्रादीनि योजयामः। नवीनानि उपकरणानि

रचयाम:।

पल्लवी - आवां प्रार्थनां गायाव:।

अध्यापकः - प्रबन्धकार्यं के निर्वहन्ति?

श्रीनिधिः - अस्माकं गणः प्रबन्धकार्यं निर्वहति। आसनस्थापनम्, अन्ते

निष्कासनकार्याणि अपि अस्मदीयाः एव कुर्वन्ति।

अध्यापकः – कार्यक्रमस्यानन्तरं तथैव मौनं धावन्ति चेतु?

चिन्मयः - तथा न कुर्मः। यथा वदित तथैव कार्यं कुर्मः।

## पूजा

पञ्चमी

| श्रद्धा | _             | लते ! लते ! किं करोति भवती ?                             |
|---------|---------------|--|
| लता     | -             | आगच्छतु, आगच्छतु, कः विशेषः ? नूतनवस्त्रं धृतवती भवती।   |
| श्रद्धा | _             | मम गृहे श्व: पूजा अस्ति। भवती आगच्छतु। भोजनार्थम्        |
|         |               | आगच्छतु।   |
| लता     | _             | अहमपि कार्ये साहाय्यं करोमि वस्तूनि कुत: आनयित ?         |
| श्रद्धा | _             | मधुराणि आपणतः आनयामि। पुष्पाणि फलानि च मम आर्यपुत्रः     |
|         |               | विपणितः आनयति। बान्धवा कदली-पत्राणि ग्रामतः प्रेषयन्ति।  |
|         |               | पूजावस्तूनि अर्चक: गृहत: एव आनयति।                       |
| लता     | - <del></del> | तिष्ठतु नलिकातः जलं स्रवति। आगच्छामि ?                   |
| श्रद्धा | _             | भवत्याः गृहे जवनिकाः नूतनाः वा ? कुतः आनीतवती भोः ?      |
| लता     | _             | मम पति: प्रयागं गतवान् आसीत्। तत: जवनिका: आनीतवान्।      |
|         |               | भवतु अहं किं कार्यं करोमि ? गृहतः शीघ्रम् आगच्छामि।      |
| श्रद्धा |               | भवती शीघ्रम् आगच्छतु। तत्र किं कार्यम् इति पश्याम:। भवतु |
|         |               | आगच्छामि।  |
| लता     | -             | इत: कुत्र गच्छति ?                                       |
| श्रद्धा |               | इत: मम गृहमेव गच्छामि। मम पति: इदानीं कार्यालयत:         |
|         |               | आगच्छति। पुत्रः विद्यालयतः आगच्छति। विलम्बः अभवत्,       |
|         |               | गच्छामि।   |

### तं जानन्ति वा भवन्तः

जानाति जानन्ति जानामि जानीमः

कार्यकर्ता - हरि: ओम्, सुप्रभातम्।

गृहस्थः - हरि: ओम् उपविशतु, क: विशेष: ? वदतु।

कार्यकर्ता - वेङ्कटेशकुमारः इति कश्चन सङ्गणकतन्त्रज्ञः अस्ति। तस्य गृहम्

भवति। तस्य गृहस या अत्र अस्ति। तं जानन्ति

वा भवन्त:।

गृहस्थः - वेङ्कटेशः इति नाम श्रुतवान्। तस्य गृहसंख्यां वदतु।

कार्यकर्ता - अहं वेङ्कटेशं जानामि। तस्य गृहसंख्या १३०५ अस्ति। तस्य

गृहम् इत: बहु समीपे अस्ति।

गृहस्थः - वीणे ! त्वं वेङ्कटेशं जानासि ? पश्यतु एतां संख्याम्।

वीणा – वेङ्कटेश:, १३०५ हाँ.... भो: भवान् अपि एतं जानाति। तस्य गृहम् एतस्य पृष्ठभागे अस्ति। अस्माकं कार्यालये सर्वेऽपि तं

जानन्ति।

कार्यकर्ता - सः उक्तवान् यत् अत्र पृच्छतु। सर्वे मां जानन्ति, इति। सोऽपि

समीचीन कार्यकर्ता।

गृहस्थः – इदानीं स्मृतवान्। तं वयं 'कुमार' इति आह्वयाम:। अतः वेङ्कटेशः इत्युक्ते न स्मृतवान्। भवतु पानीयं किमपि स्वीकरोतु।

कार्यकर्ता – तर्हि किञ्चित् क्षीरं ददातु। वेङ्कटेशस्य गृहे एव अद्य उपाहार:।

वीणा - वयमपि तस्य गृहं गृहसदस्यान् च सम्यक् जानीम:। तदा तदा

गच्छाम:।

कार्यकर्ता – अस्तु, धन्यवाद:, गच्छामि। तत्र सर्वे मम प्रतीक्षां कुर्वन्ति।

# गृहिण्योः सम्भाषणम्-III

शृणोति शृण्वन्ति

| सुनीता |                | अहो ! एष: भवत्या: पुत्र: सम्यक् गायति खलु। सङ्गीतकक्ष्यां<br>गच्छति किम् ?   |
|--------|----------------|--|
| मधुरा  | _              | नैव तस्य भगिनी गृहे अभ्यासं करोति। सः श्रद्धया शृणोति।<br>अतः गायति।   |
| सुनीता | _              | अहं सङ्गीतं बहु इच्छामि। कक्ष्यां गच्छतु इत्युक्ते मम पुत्री न<br>शृणेति एव। किन्तु चलचित्रगीतानि सदा शृणेति।                          |
| मधुरा  | _              | मम गृहे सर्वेऽपि सङ्गीतप्रियाः ! अतः सर्वदा भिक्तगीतानि,<br>भावगीतानि, भजनानि, सर्वाणि अपि शृणुमः।                                     |
| सुनीता | _              | मम गृहे अहम् एका एव गीतं शृणोमि। अन्ये सर्वे वार्तां<br>शृण्वन्ति। चलचित्रगीतानि शृण्वन्ति, तावदेव।                                    |
| मधुरा  | -              | गृहे अस्माकं वचनानि केऽपि न शृण्वन्ति। ते यथा इच्छन्ति<br>तथा कुर्वन्ति।   |
| सुनीता | 2.00 (A)       | किन्तु मम पार्श्वगृहे माता यत् वदित तत् सर्वेऽपि शृण्वन्ति,<br>पालयन्ति च। किम् अन्यत् पितः अपि सा यथा वदित तथा<br>शृणोति, जानाति वा ? |
| मधुरा  | (4 <u>——</u> 4 | केषुचित् गृहेषु मातुः वचनं गृहसदस्याः शृण्वन्ति। केषुचित्<br>अन्ये यत् वदन्ति तत् माता शृणोति तावदेव।                                  |

### शुभयात्रा

वासरा: भविष्यत

पत्नी सोमवासरे प्रत्यागमिष्यति खल ? पति: आम्, सोमवासरे प्रात: आगमिष्यामि। रविवासरे मम स्नेहित: सक्टम्बम आगमिष्यति। पुत्रः सुनीलः शनिवासरे सायं चेन्नै गमिष्यति इति। पत्नी पति: भवत्, मङ्गलवासरे विवाह: अस्ति। अहं सोमवासरे प्रात: आगमिष्यामि खलु, सायं मिलित्वा विपणि गमिष्याम:। मम स्नेहितमपि सुचयत्। अहो ! अस्मिन् सप्ताहे बहु कार्यक्रमा: सन्ति। बुधवासरे पत्नी रजन्याः विद्यालये वार्षिकोत्सवः। कार्यक्रमे तस्य भरतनाट्यम् अस्ति। पति: चिन्तां मा करोतु भवती। तत्रापि गच्छाम:। गुरुवासरे पूर्णतया विश्रान्तिः। नास्ति भो: ! गुरुवासरे प्रतिवेशिन्या: गृहे कोऽपि विशेष: पत्नी अस्ति। सा भोजनार्थमेव आहतवती। पति: भवतु, अन्यत् सर्वम् अनन्तरं चिन्तयिष्याम:। अहं तु इदानीं गच्छामि। पत्नी भवतः प्रयाणं सुखकरं भवत्। पति: अयि ! 'शुभास्ते पन्थान: सन्तु' इति कालिदास-वचनं वदत्। पत्नी भवान् कालिदासः नैव खलु ?

## कार्यविवरणम्

लट्

सतीशः - उत्पीठिकायाम् एकं पुस्तकम् अस्ति। कस्य पुस्तकं भोः ?

राजारामः – तत् वा ? गिरीशस्य पुस्तकम्। सः त्यक्त्वा गतवान् स्यात् ?

सतीशः - गिरीशस्य वा ? सः किं लिखितवान् पश्यामि एकवारम्।

१. लेखकस्य कार्यालयं गच्छामि

२. अनुजायै पत्रं लिखामि

3. प्रबन्धकेन सह चर्चां करोमि

४. यानपेटिकां क्रीणामि।

किमर्थं लिखितवान् एषः। राजाराम ! शृणोतु भवान् एषः

किमपि लिखित्वा पुस्तकं पूरितवान्।

राजारामः - तस्य कार्यविवरणपुस्तकं भोः ! सः एव आगतवान् ददातु

तस्मै।

सतीशः - गिरीश ! किं भवान् पुस्तके गृहपाठं लिखितवान् ?

गिरीश: - भवान मम पस्तकं किमर्थं स्वीकृतवान् ? अहं प्रतिदिनं

कार्याणि लिखामि। अनन्तरं रात्रौ परिशीलयामि।

सतीशः – परिशीलनानन्तरम्....।

गिरीश: - किं कार्यं कृतवान् किं न कृतवान् इति जानामि। अनन्तरिने

यत् न कृतवान् तत् प्रथमं समापयामि।

सतीशः – बहु उत्तमम्, अहमपि इतःपरं तथैव करोमि।

### विवाहात्परम्

#### पञ्चमी/आनीतवान्

माता विवाह: समाप्त: अस्ति। इत:परम् आनीतानि वस्तिन ददात जगदीश । जगदीशः अम्ब ! अहम् ओङ्कारनिलयत: कटान् आनीतवान्। हरिनिवासत: महाजलपात्रम् आनीतवान्। मधुकुपातः चषकान आनीतवान। एतत्सर्वमपि अद्य यानेन नेष्यामि। माता ध्वनिमुद्रिका:च१५ ध्वनिमुद्रिका: कृत: भवान ? केशवनिलयतः ध्वनिमुद्रिकाः आनीतवान्। विस्मृतवान् आसम्। जगदीशः ता: अपि अद्य नेष्यामि। प्रतिनिवेशिनिगृहत: अहं स्थालिका: आनीतवान् खलु। ता: माता स्थालिकाः अहं प्रत्यर्पयिष्यामि। जगदीशः अम्ब ! शङ्करमठतः अहं कलशम् आनीतवान खल। तस्मै ददातु। शिशिरस्य गृहतः भवान् आच्छादकानि आनीतवान् खलु। तानि माता अपि प्रेषयामि किम ? जगदीशः मास्तु, तानि वयमेव प्रत्यर्पयाम:। अनुजं शिशिरगृहं प्रेषयत। अस्तु भवान् सावधानं गच्छत्। माता

## पदकथनक्रीडा

लोट्

भो: छात्रा: ! अत्र, आगच्छत। मण्डलाकारेण उपविशत। आचार्या कोडां कोडाम। शीघ्रं शीघ्रम् आगच्छन्तु। अधिकसमयं यावत् क्रीडाम। ः ह्हाइ रमे ! त्वं पङ्कौ उपविश। भीम ! अग्रे आगच्छ। युवां किञ्चित् आचार्या अपसरतम्। आर्ये अहं कुत्र उपविशामि ? प्रतीक्षा त्वं किमर्थं विलम्बं करोषि ? शीघ्रं हेमलताया: पार्श्वे उपविश। आचार्या आर्ये का कीडा ? क: नियम: ? सहास: शृण्वन्तु, अहम् एकं शब्दं वदामि। तस्य शब्दस्य प्रत्यक्षरं आचार्या शब्द: वक्तव्य:। उक्तं शब्दं पुन: मा वदन्तु। ज्ञातं खलु ? क्रीडायाः नाम वदतु आर्ये। रघीन्द्र:

आचार्या – क्रीडाया: नाम 'प्रत्यक्षरपदकथनम्'। 'गिरिजावल्लभः' इति शब्द:। वदत् प्रदीप ! 'गि' इति प्रथमाक्षरम्।

प्रदीपः - राकेशः प्रथमं वदतु। ततः आरम्भः भवतु आर्ये।

आचार्या - भवत्, राकेश ! वद त्वं शीघ्रम्।

राकेशः – गिरिः

चन्द्रः - रिपुः

**स्नेहा** – जानकी...।

**प्रदीपः** – नस्त्रम। सुजाता – लाभः।

राकेशः - भल्लुकः।

आचार्या – इदानीम् अवगतवन्तः खलु। प्रदीप एकं शब्दं वदतु। तस्य शब्दस्य प्रत्यक्षरं एकः शब्दः इति सर्वे वदन्तु क्रीडन्तु। अहमिदानीमेव आगच्छामि।

### अधिकं प्राप्तवान्

चतुर्थी, क्तक्तु

रामगोपालः - विवाहकार्यक्रमः समाप्तः किम् ?

मधुकरः - विवाहः समाप्तः। मम कोषः अपि रिक्तः।

रामगोपालः - किमर्थम् ? तावत् किं कृतवान् ?

मधुकरः – विवाहसमये अहं जनकाय यानपेटिकां दत्तवान्। अम्बायै नृतनं

कण्ठहारं दत्तवान्। अनुजाय घटीं दत्तवान्।

रामगोपालः - अनुजायै किं दत्तवान् ?

मध्करः - अनुजायै अहं स्वर्णमयीं लेखनीं दत्तवान्। एतावदेव न, मम

मातुलाय कौशेयवस्त्राणि, मातुलान्यै कौशेयशाटिका...। एवं

बहविधाः व्ययाः।

रामगोपालः - विवाहसमये श्वसुरः भवते किं दत्तवान् ?

मध्करः - अहं तु वरदक्षिणां न स्वीकृतवान्। किन्तु अहम् अमेरिकायाम्

अस्मि इतिकारणतः सः मह्यं कारयानं, सुवर्णहारम्, एकां

घटीम् उत्तमानि वस्त्राणि, अन्यविधानि कानिचन वस्तुनि

च दत्तवान्।

रामगोपालः - भवतः पत्न्यै शालिन्यै अपि दत्तवान् स्यात्।

मधुकरः – सा तस्य एका एव पुत्री। अतः तस्यै अपि प्रभूतं दत्तवान्।

राम ालः – तर्हि भवतः कोषः पुनः पूर्णः स्यादेव।

मधुकरः - अहम् एकः एव व्ययं न कृतवान्। मम पिता अपि व्ययार्थं

धनं दत्तवान्।

रामगोपालः – तथापि चिन्तां न करोतु। अन्येभ्यः यावत् दत्तवान् ततोऽपि

अधिकं प्राप्तवान् अस्ति।

#### चित्ररचना

#### यत्-तत्, द्वितीया-तृतीया

शिक्षकः – भो ! अहं कृष्णफलकं बहूनि चित्राणि लिखामि। भवन्तः तत् दृष्ट्वा यत् इच्छन्ति तत लिखन्त्।

चन्दनः - श्रीमन् ! लेखन्या लिखामि उत अङ्कन्या ? कंन लिखाम:?

शिक्षकः - अङ्कन्या अपि लेखितुं शक्नुवन्ति। लेखन्या, वर्णलेखन्या,

अन्येन कंनचित् वा लेखितुं शक्नुवन्ति।

वसुमित – अहं अङ्कन्या लिखामि। पवित्रा लेखन्या लिखित श्रीमन् !

पवित्रा - अहम् अङ्कर्नों न आनीतवती। अतः लेखन्या विमानं लिखामि।

अञ्जली - श्रीमन् अहं कूर्चेण शृगालं लिखामि किम् ?

शिक्षकः - लिखतु। यदि शक्नोति तर्हि वर्णमपि योजयतु।

जनार्दनः - अङ्कन्या घटीं लिखामि। राघवः किमपि न लिखति। तृष्णीम्

उपविष्टवान् अस्ति स:।

शिक्षकः – किमर्थं राघव ? किम् अभवत् भवतः ?

राघवः – अहम् अङ्कर्नी लेखनी वा न आनीतवान्। कथं लिखानि ?

पुनीतः - मम समीपे द्वे अङ्कन्यों स्तः। स्वीकरातु एकाम् अङ्कनीम्।

राघवः - धन्यवादः। श्रीमन् ! अङ्गन्या फलं लिखामि।

शिक्षकः - विंशति निमेपेप् भवन्तः चित्रं रचीयत्वा दर्शयन्त्। परस्परं

वार्तालापं मा कुर्वन्तु।

## यदि ज्वरः तर्हि गुलिके

यथा-तथा, यदि-तर्हि

अखिलः – राजेश: किमर्थम् अद्य कार्यालयं नागतवान् ?

**माधुरी** – अद्य प्रातः आरभ्य तस्य महान् ज्वरः अस्ति भोः। अतः सः

शयनं कृतवान् ?।

अखिलः - किं सः निद्रां कृतवान् ? तस्मै भवती औषधं दत्तवती खलु ?

माधुरी - इदानीं सः औषधं पीत्वा निद्रां कृतवान्। यदा षट्वादनं भवित

तदा पुन: औषधं दास्यामि।

अखिलः - यदा उत्तिष्ठित तदा 'अहम् आगतवान्' इति वदतु।

मधुरी - उपविशतु। काफी ददामि। श्व: यदि ज्वर: न्यून: भविष्यति

तर्हि सः कार्यालयम् आगमिष्यति।

अखिलः - मास्तु यदि विश्रान्तिः आवश्यकी तर्हि स्वीकरोत्। अहं कार्यालये

वदामि।

माधुरी - यदा ज्वर: भवति, तदा किमपि स: न स्वीकरोति। अत:

नि:शक्ति: भवति।

अखिलः - अहम् आगच्छामि। तं सूचयत्।

राजेशः - माधुरि ! इदानीं ज्वर: अधिक: अस्ति इति चिन्तयामि, पश्यत्।

वैद्यः किम् उक्तवान् ?

माधुरी - यदि ज्वर: अधिक: अस्ति तर्हि गुलिके ददातु इति उक्तवान्।

भवान् शयनं करोतु अहं जलम् आनयामि।

## संस्कृतसम्भाषणम्

#### किमर्थम् /कति/कुत:

भो: ! भवान सङ्गणकज्ञानं कृत: प्राप्तवान् ? शिल्पा अहम् अमेरिकायां सङ्गणकज्ञानं प्राप्तवान्। नरेन्द्रः भवान् किमर्थं भारतम् आगतवान् ? भवतः जननीजनकौ कुत्र शिल्पा स्त• ? मम जननीजनकौ अमेरिकादेशे स्त:। अहं संस्कृत-शास्त्राणाम् नेरन्दः अध्ययनार्थं भारतम् आगतवान्। तत्रापि संस्कृतशास्त्राध्ययनाय प्रथमं संस्कृतसम्भाषणं ज्ञातुमिच्छामि। भवती किम् अधीतवती। अहं संस्कृतसाहित्यम् अधीतवती। संस्कृते स्नातकोत्तरपदवीमपि शिल्पा प्राप्तवती। अधुना शोधकार्यमपि करोमि। भवती अत्र कृति वर्षेभ्यः कार्यं करोति ? नरेन्द्रः अहं त्रयोदशवर्षेभ्य: संस्कृतप्रचारकार्यं करोमि। शिल्पा अत्र संस्कृताध्ययनाय बहुभ्य: प्रदेशेभ्य: जना: आगच्छन्ति नरेन्द्रः संस्कृताध्ययनाय विदेशेभ्य: अपि प्रतिवर्षम् आगच्छन्ति, तिष्ठन्ति, शिल्पा: पतन्ति च। ते अत्र आगत्य कथम् अध्ययनं कुर्वन्ति ? नरेन्द्रः ते अत्र आगत्य पठन्ति। किन्तु मन्दगत्या शिक्षणं भवति। यतः शिल्पा: ते शीघ्रम् उच्चारयितुं न शक्नुवन्ति। किन्तु मासत्रयं मासचतुष्टयं वा स्थित्वा, सम्यक् ज्ञात्वा गच्छन्ति। अत्रत्येन संस्कृतवातावरणेन अत्यन्तं प्रभाविताः भवन्ति। अहं बहून् विषयान् ज्ञातवान्, धन्यवाद:। अहमपि नरेन्द्रः संस्कृतसम्भाषणाभ्यासद्वारा संस्कृतशास्त्राणाम् अध्ययनार्थं परिश्रमं करिष्यामि।

# बेङ्गलूरुनगरे अनुभवः

द्वितीया बहुवचनम्

सुधीरः - अभिराम ! भवान् बेङ्गलूरुनगरं गत्वा किं किं दृष्टवान् ?

अभिरामः - अहम् पुस्तकापणं गतवान् । तत्र पुस्तकानि दृष्टवान्। कादम्बरीं

क्रीतवान्। उपन्यासान् दृष्टवान्।

सुधीरः - तत्र विश्वविद्यालये प्रबन्धकान् दृष्टवान् किम् ?

अभिरामः – विश्वविद्यालये न केवलं प्रबन्धकान्, अपितु बहून् शोधच्छात्रान्

दुष्टवान्। अनेकान् लेखान् सङ्गृहीतवान्।

सुधीरः - तत्र प्रसिद्धम् उद्यानं न गतवान् किम् ?

अभिरामः - मध्याह्ने वस्तुसंग्रहालयं गतवान्। तत्र अनेकानि वस्तूनि दृष्टवान्।

पुरातनानि आयुधानि दृष्टवान्। मार्गदर्शकान् पृष्टवान्। सायम् उद्यानं गतवान्। तत्र वर्णरञ्जितानि पुष्पाणि दृष्टवान्। पुष्पैः

शोभमानाः लताः दृष्टवान्। तृणैः निर्मितानि चित्राणि दृष्टवान्।

सुधीरः - तर्हि बेङ्गलुरुनगरं द्रष्टुम् एकं दिनं न पर्याप्तम्। भवान् तत्र

कति दिनानि अटितवान् ?

अभिरामः - दर्शनीयानि स्थानानि बहूनि सन्ति तत्र। किन्तु कार्यभारकारणतः

अहं शीघ्रम् आगतवान्।

सुधीरः - पुनः मिलामि, भवतः अनुभवान् वदतु।

## किञ्चित् पाठयतु

परितः

अनीता वत्से ! आगच्छत्, स्थालिकां स्थापयत्। भोजनं सिद्धम्। पत्री (राधिका) -अम्ब ! किम अस्मिन चषके शर्करा आसीत ? चषकं परितः पिपिलिकाः सन्ति। अनीता अहो ! विस्मृतवती आसम्। चषकं क्षालियत्वा स्थापयत्। अन्जम् अपि आह्वयतु। दिलीप ! उत्पीठिकां परित: पुस्तकानि स्थापितवान् खलु। पुत्री सदा भवान पुस्तकानि अव्यवस्थिततया एव स्थापयति। आगच्छत् भोजनार्थम्। अनीता दिलीप ! स्थालिकां परित: मा पातयत्। सम्यक् भोजनं करोत्। भगिनि ! 'परितः' शब्दस्य एकं वाक्यं वदत्। विद्यालये दिलीप: मम स्नेहित: मां पृष्टवान्। अहम् एवम् उक्तवान्-'देवालयं परितः प्रदक्षिणं करोमि' इति। एतत् वाक्यम् अशुद्धम् उत शृद्धमस्ति? वाक्यं शुद्धमेव अस्ति। एतादशानि अन्यानि वाक्यानि राधिका यथा-'गृहं परित: प्राकार: अस्ति।' 'दीपं परित: कीटा: सन्ति।' 'शिक्षकं परितः छात्राः सन्ति।' अनीता इदानीं मौनेन खादन्त्। अनन्तरं पाठयत् भवती। दिलीप: भोजनानन्तरं मम प्रकोष्ठम् आगच्छत्। किञ्चित् पाठयत्।

## रम्याप्रदर्शिनी

#### तृतीया बहुवचनम्

तात ! अद्य प्रदर्शिनीं द्रष्टुं किं नगरं गच्छाम ? पुत्र: पिता ्प्रदर्शिनी कुत्र आयोजिता अस्ति? किं भवान् स्थलं जानाति ? प्रदर्शिनिस्थलम् अहं जानामि। गृहजनाः सर्वे गच्छाम। पुत्र: पिता अहं ५-३० वादने मम कार्यं समापयामि। गच्छाम। तात ! पश्यत्, प्रदर्शिनी विविधवर्णरञ्जितै: दीपै: अलङ्कता मञ्जला अस्ति। अन्तः गच्छामः। पश्यत्, दण्डैः विविधविन्यासं कृतवन्तः। पुत्र: अत्र पश्यत्, शलाकाभिः चित्राणि कृतवन्तः। माता तत्र गच्छाम। एका पाञ्चालिका तस्या: स्नेहितै: सह क्रीडित। पुत्र: अपरां पश्यतु, सखीभि: सह नृत्यति। अन्या बालकै: युद्ध्यति। पिता वत्स ! प्रदर्शिनीदर्शनार्थं वयं यत् आगतवन्तः तत् सार्थकम् अभवत्। प्रदर्शिनी नृतनोपकरणै: सज्जीकृतवन्त: सन्ति। अस्मिन् वर्षे माता प्रदर्शिनी समीचीना अस्ति। अहो, तत्र पश्यत् अम्ब ! देवीं सम्यक् अलङ्कृतवन्त: सन्ति। मञ्जूला अहो, अपूर्वम्। वर्णोपेतै: दीपै, अनेकाभि: मालाभि:, पृष्पै:, फलै: विविधै: शाकै: देव्या: मण्डप: अलङ्कुत: अस्ति। अत: स: द्रष्टृणां सर्वेषां मनः आकर्षति। प्रथमं तत्र गच्छामः। सत्यम्, तत्र गच्छाम। कञ्चित्कालं स्थित्वा पश्याम:। पुत्र! माता भवन्तं प्रदर्शिनीविषयं कः उक्तवान् ? मम स्नेहिता: सर्वे दृष्टवन्त:। ते माम् उक्तवन्त:। प्त्र: पिता परश्व: रविवासर: खलु ? यदि इच्छन्ति पुन: आगच्छाम। गच्छाम इदानीम्।

## अपेक्षाः पूरियष्यति

#### चतुर्थी बहुवचनम्

मुख्याध्यापकः – छात्राः ! एका सन्तोषवार्ता अस्ति। यः अस्माकं राज्यस्य

मुख्यमन्त्री अस्ति तस्य अद्य जन्मदिनम् अस्ति। सः अतीव

दयालु: अस्ति उदार: अपि अस्ति।

छात्राः - श्रीमन् ! ध्वनिवर्धकः सम्यक् नास्ति। अन्ते न श्रूयते।

मुख्याध्यापकः – अस्तु, उच्चै: वदामि। किं श्रूयते इदानीम् ?

छात्राः – आम्, श्रूयते।

मुख्याध्यापकः – सः मुख्यमन्त्रिमहाशयः अस्माकं शालायाः शिक्षकेभ्यः

अमूल्यानि वस्त्राणि दत्तवान्। शिक्षिकाभ्यः शाटिकाः दत्तवान्। प्रौढशालायाः छात्रेभ्यः समवस्त्राणि दत्तवान्।

प्राथमिक-शालाच्छात्रेभ्य: पुस्तकानि दत्तवान्।

छात्राः - श्रीमन् ! बालेभ्यः सः किं दत्तवान् ?

मुख्याध्यापकः – बालेभ्यः अधिकानि क्रीडासाधनानि दत्तवान् सः। किञ्चित्

धनमपि दत्तवान् अस्ति। एतदतिरिच्य अन्यत् किम् अपेक्षितम्

इति भवन्तः वदन्त्।

प्रौढच्छात्राः - अस्माकं प्रकोष्ठेभ्यः (कक्ष्याभ्यः) अधिकानि आसनानि

आवश्यकानि।

शिक्षिका – बालानां कक्ष्याभ्य: पाठोपकरणानि आवश्यकानि।

शिक्षकः – सर्वेभ्यः बालेभ्यः क्रीडासाधानानि अत्यावश्यकानि।

मुख्याध्यापकः – अस्तु, एताः अपेक्षाः सः पूरियष्यित प्रायः। पुनः अपि

किमपि अपेक्षितं चेत् श्वः सूचन्त्। धन्यवादः।

47

### शिल्पकारः

षष्ठी

पथिक: - भो: शिलां कट्टियत्वा कट्टियत्वा भवान किंवा करोति ?

शिल्पकार: - अहं गणेशस्य विग्रहं करोमि।

पथिक: – किमर्थं भवान् शिवस्य विग्रहं न करोति ? किं भवान् गणेशस्य

भक्त: ?

शिल्पकारः - शिवस्य विग्रहः लिङ्गरूपः, अतः अहं गणेशस्य विग्रहं करोमि।

पथिकः - भवान सर्वविधान विग्रहान अपि करोति किम् ?

शिल्पकार: - भवते कीदश: विग्रह: आवश्यक: ? देवस्य चेतु कस्य देवस्य?

देव्याः चेत् कस्याः देव्याः ? रामस्य लक्ष्म्याः सरस्वत्याः उत

कष्णस्य ? कस्य विग्रह: आवश्यक: ?

पथिकः - नवरात्रसमये पूजां कर्तुं लक्ष्म्याः विग्रहः आवश्यकः। तथैव

पार्वत्या: (गौर्या:) विग्रह: अपि आवश्यक:।

शिल्पकार: - भवते कदा आवश्यकम् ?

पथिकः – मह्यं जुलै-मासस्य १० दिनाङ्के आवश्यकम्। कृत्वा ददाति

किम् ? एकस्य विग्रहस्य कृते कति रूप्यकाणि ?

शिल्पकारः – देव्याः इति कारणतः कति रूप्यकाणि इति न वदामि। भवानेव

चिन्तयित्वा ददातु।

पथिकः - अस्तु जुलै-मासस्य १० दिनाङ्के आगच्छामि।

48

संस्कृतस्वाध्याय:

### पीतवर्ण:

षष्ठी

दिव्या माले । आगच्छति वा ? आपणं गच्छाव। आगच्छामि, गच्छाव। कस्य आपणं गच्छाव ? माला प्रथमं पादरक्षाया: आपणं गच्छाव। अहो... तत्र एक: आपण: दिव्या अस्ति। आपणिक: कस्याः कृते पादरक्षा ? मम कृते एव। तां पीतवर्णां पादरक्षां ददातु। कतिरूप्यकाणि? दिव्या आपणिकः एतस्याः कृते १५० रूप्यकाणि। कृष्णवर्णपादरक्षायाः न्यनं मूल्यम्। दिव्या पीतवर्णां पादरक्षां दर्शयत्। पादरक्षायाः मूल्यम् अधिकम् अस्ति भोः। एषा मास्तु। माला नैव, मम अम्बा पीतवर्णस्य वस्त्रम् आनीतवती। अतः दिव्या पीतवर्णपादरक्षा आवश्यकी। भवतु आगच्छत्। कङ्कुणस्य आपणं। गच्छामः। आगच्छत्, किं? कङ्कणानि अपि पीतवर्णयतानि एव माला आवश्यकानि वा? दिव्या आम् सत्यम्। आगामि अगस्तमासस्य चतुर्थे मम मातुलस्य विवाह: भविष्यति। तदा पीतवर्णस्य वस्त्रम्, पीतवर्णस्य कङ्कणम्, पीतवर्णस्य तिलकं, पीतवर्णस्य पादरक्षां च धरिष्यामि। सर्वाणि अपि पीतवर्णस्य एव भविष्यन्ति। तर्हि अहम् एकम् उपायं वदामि किम ? माला दिव्या वदत्, वदत् ? भवत्या: मातुलस्य विवाहपर्यन्तं दन्तधावनं मा करोतु। तदा माला

भवत्याः दन्ताः अपि पीतवर्णाः भवन्ति।

49

प्रथमा दीक्षा : सम्भाषणम्

### मम पतिः भोः !

एव

विमला अश्विन ! पाक: सिद्ध: किम् ? अश्विनी भो: ! अद्य जलमेव नासीत। भवत्या:..... मम अद्य पाककार्यमेव नास्ति। अद्य वयं विवाहं गच्छामः। विमला किन्तु मम पति: कार्यालयत: न आगतवान् एव। अष्टिवनी भवत्या: पुत्री सङ्गीतकक्ष्यां न गच्छति किम? विमला सा सङ्गीतं न इच्छिति एव। भवत्या किमर्थं सङ्गीतकक्ष्यागमनं पुष्टम्? अश्विनी अद्य सा किमपि गीतवती। अहं तत् श्रुतवती। सा सम्यक् गायति। अत: अहं चिन्तितवती एषा सङ्गीतकक्ष्यां गच्छति इति। विमला अश्विन ! अद्य प्रात:काले एव कोऽपि भवत्या सह सम्भाषणं करोति स्म खलु ? कः सः ? अश्विनी अद्य प्रात: अहम् अन्येन केनापि सह सम्भाषणं न कृतवती एव। तदस्तु, भवत्या दृष्ट: स: कथम् अस्ति ? विमला सः उन्नतः उपनेत्रधारी, श्वेतः..... अश्विनी सः ! सः एव मम पतिः भोः। विमला एवं वा ! दूरात् अहम् अन्य: कोऽपि नृतन: इति चिन्तितवती।

## देहलीदर्शनम्

लङ्

रामचन्द्रः – कदा आगच्छत् देहलीतः ?

चेतनः - ह्यः एव आगच्छम्।

रामचन्द्रः – प्रयाणं सुखकरम् आसीत् किम् ?

चेतनः - प्रयाणं तु सुखकरम् आसीत्। १० दिनाङ्के प्रातः एव प्राप्नुवम्।

स्नेहित: निस्थानम् आगच्छत्। तेन सह अगच्छम्।

रामचन्द्रः - देहलीनगरे किं किम् अपश्यत् ?

चेतनः - कुतुबमीनारम् अपश्यम्। सुन्दरम् अस्ति। मार्गदर्शकः विवरणम्

अकरोत्।

रामचन्द्रः - राष्ट्रपतिभवनं न अपश्यः किम् ?

चेतनः - तत्तु अपश्यम्। बहु विशालम् अस्ति।

रामचन्द्रः - भोजनार्थं किम् अकरोः ?

चेतनः - आवां कमलमन्दिरं द्रष्टुं बहुदूरम् अगच्छाव तत्रैव समीपे दक्षिण-

भारतीय-उपाहार मन्दिरम् अस्ति तत्र भोजनार्थम् अगच्छाव।

रोटिका:, ओदनं, च अखादाव। बहु स्वादिष्टम् आसीत्।

रामचन्द्रः - देहलीतः किम् आनयः।

चेतनः - किमपि न आनयम्। रविवासरः इति सर्वे आपणाः पिहिताः

आसन्।

रामचन्द्रः – तव स्नेहितोऽपि निस्थानम् आगच्छत् वा ?

चेतनः – नैव, तस्य सङ्गणककार्यम् अस्ति इति तथैव अगच्छत्। गमन-

समये बहुनि फलानि अपि अयच्छत्।

## वार्षिकोत्सववर्णनम्

नैव/अपि/सम्यक्

पत्नी ह्यः वयं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवं गतवत्यः। पति: कार्यक्रम: कथम् आसीत् ? पत्नी सम्यक् आसीत्। परं किञ्चित दीर्घ: कार्यक्रम: आसीत्। पति · के के कार्यक्रमा आसन ? पत्नी नृतनानां कार्यक्रमाणाम् आयोजनं कृतवन्तः। राजस्थानी-गीतस्य नृत्यं बालिकानाम् आसीत्। बालकानाम् हिन्दी-गीतस्य नृत्यम् आसीत। केवलं नृत्यम् आसीत् किम् ? पति: नैव, शिक्षकाणां संस्कृतनाटकम् आसीत्। ते सम्यक् न कृतवन्तः। पत्नी जना: अपि अर्थम् अज्ञात्वा कोलाहलं कृतवन्त:। पति: बालकानां नाटकं न आसीत् वा ? नैव, आरम्भे एवं युवतीनाम् स्वागतनृत्यम् आसीत्। अपर: पत्नी कार्यक्रमः अतिविशिष्टः। पति: कः कार्यक्रमः ? 'पञ्चभूतानां मेलनं इति' प्रथमं, भूमि:, आकाशः, पवनः, पत्नी पावक:, जलम्-एतेषां पृथक् नृत्यम्। अनन्तरं सर्वेषां मिलित्वा नृत्यम्। मध्ये मध्ये सम्भाषणम्-इत्युक्ते नृत्यरूपकम् आसीत्। कार्यक्रमस्त् सम्यक् आसीत्। तथैव अलङ्कारा: अपि आसन् पति: किम् ? पत्नी दीपानाम् अलङ्कारः, ध्वनिवर्धकानां, पुष्पाणां, फलानां-इत्यादिनां

बहुविधाः अलङ्काराः आसन्।

### यात्राचिटिकारक्षणम्

अस्⁄नी⁄लोट्

प्रबन्धकः – महेश ! अद्य आरक्षणार्थं रेलयाननिस्थानकं गच्छतु। द्वयोः

हरिद्वारगमनाय यात्राचिटिकाम् आनयतु।

महेशः - आर्य ! अद्य मया सह बालाचार्यः अपि आगच्छति। आवां

ततः शिवाजीनगरं गच्छावः।

प्रबन्धकः – अद्य कार्यालयकार्यं नास्ति वा ? कदा आगच्छतः ?

महेशः - रात्रौ आगच्छाव:।

प्रबन्धकः – शिवाजीनगरे कः अस्ति ? बालाचार्यं किमर्थं नयति ?

महेशः - शिवाजीनगरे मम भगिनी अस्ति। मम भगिनी बालाचार्यस्यापि

बन्धुः। अतः सा उक्तवती-बालाचार्यमपि आनयतु इति। अतः

तत्र गच्छाव:।

प्रबन्धकः - तत्र कोऽपि विशेषः अस्ति किम् ?

महेशः - मम आवुत्तस्य किञ्चित् 'अस्वास्थ्यम्' इति। अतः तत्र गत्वा

तं दृष्ट्वा आगच्छाव:।

प्रबन्धकः - भवतु, कार्यविषये चिन्तयताम्। शीघ्रं गत्वा आगच्छताम्।

53

## परीक्षायै सज्जता

सप्तमी बहुवचनम्

शिक्षकः - छात्राः ! परीक्षा सन्निहिता अस्ति। सम्यक् पठन्त्।

अनन्तः - परीक्षा कुत्र प्रचलिष्यति ?

शिक्षकः - सर्वेषु प्रकोष्ठेषु (कक्ष्यासु) क्रमसंख्यां स्थापयाम:। परीक्षा

अस्माकं विद्यालये एव भविष्यति। इदानीं सर्वे अपि छात्रा:

बहि: गच्छन्त।

अनन्तः – किमर्थम् आचार्य ! अद्य एव संख्यां स्थापयन्ति किम ?

शिक्षकः - इदानीं भवन्तः सर्वेषु प्रकोष्ठेषु स्वच्छतां कुर्वन्तु। उत्पीठिकास्

अपि धूलिं मार्जयन्तु। कृष्णफलकेषु अपि धूलिं मार्जियत्वा

दिनाङ्कादिकं लिखन्त्।

राजीवः - आचार्य ! सर्वेऽपि कार्यं न कुर्वन्ति। केचन बहि: अटन्ति।

शिक्षक: - बालकेषु एकं प्रमुखं करोमि। बालिकासु एकां प्रमुखां करोमि,

यदि क्रीडाङ्गणेषु क्रीडन्ति तर्हि दण्डम् आनयामि। केचन

द्रोणीषु जलं पूरियत्वा आनयन्त्।

**मालती** – मार्जनार्थं वस्त्राणि कृत्र सन्ति ?

शिक्षकः - वस्त्राणि वस्तुसङ्ग्रहप्रकोष्ठे सन्ति। तत्र गत्वा आनयन्तु।

छात्राः - आचार्य ! वयं गच्छाम:। सज्जतां कुर्म:।

## कार्यकर्तृगृहम्

सप्तमी बहुवचनम्

अद्य शीघ्रम् आगच्छतु। विजयनगरं गच्छाव:। मालती विजयनगरे कः विशेषः ? दिलीप: अद्य एव खलु सन्ध्याया: विवाह: ? अत: शीघ्रं गच्छाव:। मालती अद्य कार्यालये बहुकार्याणि सन्ति। केशवकुपायां मन्थन-दिलीप: कार्यक्रमः। अतः विवाहगमनं न भवेत। भवतः सर्वदा कार्यालये कार्याणि भवन्ति। रविवासरे अपि मालती विराम: नास्ति। कुत्रापि गमनम् एव न भवति। मालति ! खेद: मास्तु। कार्यालये १०वादने सीमाया: पाठ: दिलीप: अस्ति। अतिथिगृहे दीपव्यवस्था, सभाङ्गणे कार्यक्रमस्य व्यवस्था, कपाटिकायां पस्तकानां योजनं, ग्रन्थालये आसन्दानां व्यवस्थापनं, पत्रिकां नीता मुद्रणालये द दान तन्मध्ये राजाजिनगरे कार्यकर्तृगोष्ठी-निर्वहणम्-इत्यादीनि कार्याणि सन्ति। अत्र किं कार्यं परित्यजामि। अन्ये कार्यकर्तार: न सन्ति वा ? मालती सुरेश: लखनऊ गतवान्, नारायण: कोलकतानगरं गतवान्। ते दिलीप: त्रयः शिविरं गच्छन्ति। पुनः के सन्ति ? किमपि करोत्। मालती

## यात्रावर्णनम्

#### क्तवतु द्विवचन प्रयोगः

किं दर्शनमेव नासीत् भवतो: ? शारदा पङ्कुजा आवां दशदिनानि न आस्व। उत्तरभारतप्रवासार्थं गतवन्तौ। त्वं किं मम गृहं आगतवती आसीत ? अहं भवत्या: गृहं द्विवारम् आगतवती आसम्। परं भवन्तौ न शारदा आस्ताम्। कुत्र कुत्र गतवन्तौ ? किं किं दुष्टवन्तौ ? आवाम् इतः वाराणसीं गत्वा विश्वनाथस्य दर्शनं कृतवन्तौ। पङ्कजा वाराणसीत: प्रयागं गतवन्तौ। प्रयागत: मथुरां गतवन्तौ। मथुरात: वन्दावनं गतवन्ती। वृन्दावने गिरिजा मिलितवती वा ? शारदा आम् ! वृन्दावने गिरिजा मिलितवती। आवां द्वौ अपि तस्या: पङ्गजा गृहं गतवन्तौ। सायं अहं गिरिजा च आपणं गतवत्यौ। मम पति: गिरिजाया: गृहे एव आसीत्। अनन्तरिदने पुन: वृन्दावनत: अयोध्यां गतवन्तौ। तत्र श्रीराममन्दिरं गत्वा पुन: वाराणसीं गतवन्ती। किमर्थं पुन: वाराणसीं गतवन्तौ ? शारदा मम पति: पुन: विश्वनाथदर्शनं कृत्वा गच्छाव: इति उक्तवान्। पङ्कजा अतः पुनः वाराणसीं गत्वा आगतवन्तौ। अरे ! महती यात्रा नन् ? शारदा आम्, अतः दशदिनेभ्यः गृहे अव्यवस्था। त्वं गमनसमये प्रसादं पङ्कजा नय।

### उदरवेदना

ह्यः/परह्य/श्वः/परश्वः आरभ्य

महाभाग । महती उदरवेदना अस्ति। किमपि औषधं ददात्। रोगी उद्वेग: मास्त्। कदा आरभ्य उदरवेदना ? वैद्यः ह्य: आरभ्य उदरवेदना, मुखे रुचि: एव नास्ति। रोगी वैद्यः ह्य: कृत्र गतवान, किं किं खादितवान् ? रोगी परह्य: मातुलस्य गृहं गतवान्। तत्र सा मधुरं कृतवती। अहं यथेष्टं खादितवान। चिन्ता मास्तु, अहम् औषधं ददामि। वैद्यः किञ्चित शिरोवेदना अपि अस्ति। बुभुक्षा एव नास्ति। मुखे रोगी रुचि: अपि नास्ति। भवतः अजीर्णं जातम्। श्वः, परश्वः निमित्तम् औषधं ददामि। वैद्यः प्रपरश्व: पुन: आगच्छतु। श्व: आहारं किं स्वीकरोमि ? रोगी श्व: परश्व: प्रपरश्व: घनाहारंव: घनाहारं न अधिकं द्रवाहारं वैद्य: स्वीकरोत्। अस्तु, प्रपरश्वः पुनः आगच्छामि। कति रूप्यकाणि। रोगी प्रथमवारम् इति ५० रूप्यकाणि ददात्। प्रपरश्वः चेत् २५ वैद्यः रूप्यकाणि एव !

भगिनी

पुत्र:

प्रथमा दीक्षा : सम्भाषणम्

## स्वादिष्टं भोजनम्

भोजनसम्बन्धिशब्दाः

अम्ब ! महती बुभुक्षा भवति। शीघ्रं भोजनं परिवेषयत्। पुत्र: वत्स ! भोजनार्थं सर्वान् आह्वयतु। अम्बा सर्वे शीघ्रम आगच्छन्त। पत्रः अद्य ओदनम्, सार:, व्यञ्जनं, क्वथितं, पर्पट: पायसम् च अम्बा अस्ति। अद्य कः विशेषः ? पुत्र: अद्य रामनवमी भो:। अत: पायसं कृतवती। अम्बा अम्ब अद्य व्यञ्जने लवणमेव न योजितवती। लवणं परिवेषयत्। भगिनी अहो विस्मृतवती। स्वीकरोतु लवणम्। अम्बा पुत्र: अम्ब ! सार: कटु: अस्ति घृतम् आवश्यकम्। पति: जलजे ! क्वथितं परिवेषयत्। वृन्ताकस्य खल् क्वथितम् अतः खण्डाः मा सन्त्। वत्स । पायसं कथमस्ति ? अम्बा पुत्र: पायसं बहु स्वादिष्टम् अस्ति। भगिनी पायसं रुचिकरं परं तक्रम् आम्लम् अस्ति। मम अवलेह: आवश्यक:। पति: तथैव जलमपि आवश्यकम। अद्य व्यञ्जनं कोऽपि न खादित। यतः तत्र लवणमेव नास्ति। सावधानं भोजनं कुर्वन्तु। किम् आवश्यकम् ? अम्बा

अद्य भोजनं तावत् सम्यक् नासीत्।

आसीत्।

निह अम्ब ! भगिनी असत्यं वदित। भोजनम् अतीव स्वादिष्टम्

## आम्रशलाटुकर्त्तनम्

#### शक्नोति-शक्नुवन्ति

शिव ! सोम ! राम ! अत्र आगच्छन्त। एते आम्रशलाटव: स्वामी आवश्यका:। कः कर्त्तयितुं शक्नोति ? अहं त न शक्नोमि। सोम:, शिव: वा शक्नुयात्। राम: अहम अपि न शक्नोमि। शिव: अपि न शक्नुयात् ? स्रोम: तर्हि तान् वृक्षात् उत्पाटियतुं कः शक्नोति। स्वामी मम गृहपार्श्वे गङ्गाराम: इति एक: अस्ति। स: एतादुशकार्ये सोम: अतीव चतुर: अस्ति। स: उत्पाटियतुं शक्नुयात्। अहं तु न शक्नोमि, भवन्त: अपि न शक्नुवति। तर्हि तं स्वामी गङ्गारामं सूचयतु। क: सूचयति ? अहं तं सूचियतुं शक्नोमि। शिव: तत्त् निश्चयेन शक्नोति एव। राम: श्वः तत् कार्यं समापयन्त्। सः तु वृक्षात् उत्पाटयति। तान् स्वामी गृहम् आनेतुं शक्नुवन्ति खलु ? तत्त् निश्चयेन शक्नुमः। सोम: सोम ! शुण्वन्तु, अहं एकसप्ताहं नगरे न भवामि। अत: किं स्वामी किं कार्यं समापयितुं शक्नुवन्ति इति चिन्तयन्तु।

## युवकमण्डले सम्मानः

इव

सतीशः - किं भो: मन्त्री इव विलम्बेन आगच्छति ?

देवराजः - क्षम्यताम्, विलम्बः अभवत्।

सतीशः - गजः इव मन्दं चलित्वा आगतवान् वा ?

देवराजः – अहं किं करवाणि ? अहं नगरयानेन आगतवान्। तत्यानं कूर्मः

इव मन्दं चलति स्म।

सतीशः - पानीयं किमपि अपेक्षितं वा ? अथवा केवलं जल्पति ?

देवराजः - भवान् कृपणः इव वचनेन एव समापयति वा अथवा किमपि

खादितुम्....।

सतीशः – किं रे बकासुरः इव सदा खादितुम् इति वदित। भवतु,

आगमनकारणं निवेदयतु। अम्ब ! देवराज: आगतवान्। खाद्यम्

आनयतु...।

देवराजः - अस्माकं स्नेहितः वादिराजः अस्ति खलु। सः कालिदासः इव

काव्यं लिखति। शारुहखान इव अभिनयति। हरिवंशराय बच्चन:

इव लेखं लिखति। नरेन्द्रकोहली इव उपन्यासं लिखति। एवं

बह प्रसिद्ध अस्ति इति।

सतीशः - तर्हि किं कुर्मः इति वदति।

देवराजः - तम् अस्माकं युवकमण्डले सम्मानयामः किम् ?

सतीशः - यवकमण्डले चर्चयामः अन्ये अङ्गीकृर्वन्ति चेतु ममापि अङ्गीकारः

एव। भवान् तस्य विषयम् उपस्थापयतु।

देवराजः - अस्तु। तर्हि श्वः मेलिष्यामि।

#### क्षम्यताम्

इति

हो, हो भवान वा ? आगच्छत, आगच्छत। अग्रजा रवि: आम अहमेव। मां क: ? इति चिन्तितवती भवती ? भवन्तं एक: महामार्जार: इति चिन्तिवती। नि:शब्दं, अकस्मात् अग्रजा भवान् आगतवान् खल् ? असत्यं मा वदत् भवती मां महाचोर: इति, अपरिचित: दृष्ट:, रवि: इति, चिन्तितवती नन् ? नैव. भवन्तं महाव्याघ्र: इति चिन्तितवती। अंग्रजा भो: तदर्थं कोप: मास्त्। अहमपि विनोदं कृतवान्। भवतु, रवि: सद्यः मां भवत्याः प्रियानुजः इति चिन्तयत्। एवं विनोदशील: इत्येव मम गहे भवान बहप्रिय: अभवत परं अग्रजा भवतः अहङ्कारः, गर्वः,... रवि: अग्रजे ! अद्य भवत्या: किम् अभवत् इति। पदे पदे कृपिता भवति खल ? सत्यं भो:। अग्रजा इति, आवृत्तः इति वा भवतः प्रीतिः अस्ति अग्रजा वा ? एकं पत्रं लिखितवान् किम् ? अन्ततोगत्वा एकां दुरवाणीं...? क्षम्यताम.....क्षम्यताम..... पादयो: पतामि। आवत्त: कदा रवि: आगच्छति? भवती एव मां रक्षतु। भवतीं शरणं गच्छामि।

## मित्रसाहाय्यम्

तुमुन्⁄क्तवतु

नवीनः – तपनः आगतवान् आसीत्। श्वः प्रातःकाले आगमिष्यामि इति उक्त्वा गतवान्।

भास्करः – भवान् उपविशतु इति न उक्तवान् किम् ?

नवीनः - अहम् उक्तवान् तथापि सः गतवान्। तस्य मुखे खेदः आसीत्।

भास्करः – सः एकम् उद्योगं प्राप्तुम् इच्छति। किन्तु तत्रत्य अधिकारी उत्कोचम् इच्छति। एषः तपनः कथं धनं दातुं शक्नोति ?

नवीनः – अतः एव मां किमपि न उक्तवान्। भवान् नास्ति इति श्रुत्वा तथैव निर्गतवान।

भास्करः – अहं श्वः अपि प्रातः एव गमिष्यामि। सः आगच्छति चेत् एतत् धनं ददातु। अनन्तरं दूरवाणीं कर्तुं वदतु।

नवीनः – तपनः गृहे प्रष्टुं न शक्नोति वा ?

भास्करः – तपनस्य गृहे अपि तावद् धनं दातुं समर्थाः न। तेषां मध्यमस्तरीय-कुटुम्बः। तिस्रः भगिन्यः अपि सन्ति। एषः एकः एव पुत्रः। कुटुम्बपोषणमपि कष्टमेव।

नवीनः - तपनस्य भवतः च कथं परिचयः।

भास्करः – तपनस्य पिता, मम पिता च स्नेहितौ। अहमपि तयो: स्नेहसम्बन्धं रक्षितुम् इच्छामि। तपनः अतीव विधेयः युवकः, गुणी च।

#### परिचयपाठ:

#### षष्ठी-भवत्यः, भवत्याः, मम

आचार्यः - सर्वेभ्यः स्वागतम्। नमस्काराः। मम नाम शम्भुनाथः। भवतः

नाम किम् ?

श्रीधरः - मम नाम श्रीधरः।

आचार्यः - भवत्याः नाम किम ?

पूनम – मम नाम पूनम्।

आचार्यः - अरविन्द ! भवत: जनकस्य नाम किम् ?

अरविन्द - मम जनकस्य नाम गिरीश:।

आचार्यः – श्रीधर ! अत्र आगच्छत् ! अहं भवतः नासिका इति वदामि।

भवानु मम नासिका इति वदत्। भोः छात्राः भवन्तः श्रीधरस्य

नासिका इति वदन्तु।

आचार्यः - भवतः कर्णः

श्रीधरः - मम कर्णः

**छात्रा:** – श्रीधरस्य कर्ण:

आचार्यः - भवतः, पादः भवतः हस्तः, भवतः शिरः, भवतः वदनम्...

इत्यादि।

श्रीधर: - मम पाद:, मम हस्त:.... मम शिर:, .... मम वदनम्...।

आचार्यः - श्रीधरस्य पादः, श्रीधरस्य हस्तः श्रीधरस्य शिरः, श्रीधरस्य

वदनम्....।

आचार्यः - भवत्याः पुस्तकम्.... एवमेव।

लता - मम पुस्तकम्।

छात्राः - लतायाः पुस्तकम् लतायाः लेखनी...।

आचार्यः - भगिनी-गृहम् इति वदामि, परिष्कारं कुर्वन्तु।

छात्राः – भगिन्याः गृहम्।

आचार्यः - गृहं-चित्रम् इति वदामि।

छात्राः - गृहस्य चित्रम्।

आचार्यः - अहम् उत्तराणि वदामि-भवन्तः प्रश्नान् वदन्तु।

आचार्यः - मम नाम गिरीशः।

छात्राः - भवतः नाम गिरीशः।

आचार्यः - पुस्तकस्य नाम बालसरिता।

छात्राः - पुस्तकस्य नाम किम् ?

आचार्यः - श्वः पुनः एतस्य पाठं कुर्मः।

माता

### क्रीडा अपि आवश्यकी

लृट्⁄सम्बोधनम्

पुत्र ! भवान एवं सदा क्रीडित चेत उत्तीर्ण: न भविष्यति। माता ज्ञानमपि न प्राप्स्यति। अम्ब ! किमर्थं तथा वदति ? अहं केवलं न क्रीडिष्यामि। अमर: अनन्तरं पिठिष्यामि। गृहसदस्याः सर्वे वदन्ति यत् भवान् सर्वदा क्रीडति। न पठिष्यति माता इति। अहं सर्वदा क्रीडामि। किन्तु कदापि अनुत्तीर्णः न भविष्यामि। अमर: भवत्याः चिन्ता मास्त्। पश्यत् गतमासस्य परीक्षफलितांशम। वत्स ! एतत् अङ्कपत्रं भवतः एव वा ? माता सत्यम् अम्ब ! भवत्याः मयि विश्वासः नास्ति यतः सर्वदा अमर: अहं क्रीडिष्यामि इति नन्। कक्ष्यायाम अहमेव प्रथमं स्थानं प्राप्तवान। अस्तु, इतः परं भवान् क्रीडत्। अहं चिन्तां न करिष्यामि एव। माता अम्ब ! मम शिक्षक: वदति। जीवने पठनमेव प्रधानं न, क्रीडा अमर: अपि तदा तदा आवश्यकी। क्रीडित चेत् शक्तिवर्धनं भविष्यति, सदा मनः उल्लिसतं भविष्यति। बृद्धिविकासः भविष्यति। अत: क्रीडा अपि प्रधाना इति। भवत् पुत्र ! भवान् उत्तमः भवत् इत्येव मम आशयः।

## मातुलः आगमिष्यति

अव्ययानि

पुत्री अम्ब ! अम्ब ! मातुल: नागपुरत: आगच्छति। वत्से ! मातुलस्य आगमनं कः सूचितवान् ? अम्बा पुत्री अम्ब ! तात: उक्तवान्-अद्य मातुल: आगच्छति इति। मातुल: आगच्छति चेत् किं किं करोति ? प्रथमं सः आगच्छत्। अनन्तरं किमपि करोमि। अम्बा पुत्री तात: असत्यं वदित वा ? किमर्थम् एवं वदित भवती ? नैव वत्से ! तात: असत्यं न वदित। किन्तु भवत्या: मातुल: अम्बा उक्ते दिने नागच्छति। अतः तथा उक्तवती। पुत्री अद्य मातुल: नागच्छति चेत् पुन: कदापि तेन सह सम्भाषणं न करोमि। किमर्थं पुत्री तावती निरीक्षा वा ? पश्यतु, बहि: तातेन सह अम्बा कोऽपि सम्भाषणं करोति। पुत्री अम्ब ! मातुल: आगतवान्। माम ! आगच्छतु मम क्रीडासाधनानि दर्शयामि। कति वर्षाणि अभवन्। किम् अस्माकं स्मरणं न भविष्यति ? पिता वत्से ! किम् एकेन श्वासेन एव सर्वं वदित ? प्रथमं मातुलाय पानीयं ददातु। अहो ! अद्य पूर्विदिशि सूर्योदय: जात: किम्। अम्बा सूर्योदय पूर्विदिशि एव। दिवाकर: तु भवतां पुरत: उपस्थित:। मातुल:

### निश्चिन्ता भविष्यामि

#### द्विवचन प्रयोगाः

लतिके ! किं करोति गृहे। भवती तु सदा कार्ये मग्ना भवति। शालिनी किं करोमि। गृहिण्याः विरामः नास्ति खल ? लितका वदतु किं वक्तुम् इच्छति। अद्य कार्यालयस्य विरामः वा ? शालिनी अतः एव एवम् आगतवती भवत्याः पुत्रः कथं पठित। लतिका मम पुत्र: सम्यक् एव पठित। अहं तु तं पाठयामि। स्वयमेव शालिनी पठित। तं पठतु इत्यपि न वदामि। अहो ! भाग्यशालिनी भवति ! मम पुत्रौ तु न पठत: एव। लतिका निरन्तरं क्रीडत:, अहं तु दिने न भवामि। तयो: पाठने मम समयोऽपि नास्ति। ह्यः तयोः शिक्षिका भवतां पुत्रौ अध्ययने रुचिं न दर्शयत: गृहे भवन्त: एतद्विषये समुचितं चिन्तयन्तु पठने रुचिं तयो: उत्पादयन्तु इति पत्रं प्रेषितवती- किं करोमि इति महती चिन्ता। लतिके ! चिन्तां न करोतु। भवत्या: पुत्रयो विषये अहम् उपायं शालिनी वदामि। क: उपाय: ? शीघ्रं वदत्। लितका भवती धनं दातुं सिद्धा अस्ति चेत् तौ प्रेषयतु। मम प्रतिवेशिनी शालिनी उत्तमं पाठयति। परं..... परं.... किम् ? लतिका सा प्रतिमासं पाठार्थं एकस्य कृते २०० रूप्यकाणि स्वीकरोति। शालिनी ये प्रथमस्थानं प्राप्नुवन्ति ते एव अधिकतया तत्र गच्छन्ति। धनविषये चिन्ता नास्ति। सा अङ्गीकरोति चेत् अद्य आरभ्य लतिका एव प्रेषयामि। अस्तु। अहं तया सह भाषणं करिष्यामि भवतीं सूचियष्यामि। शालिनी धन्यवादः। अहं मम पुत्रयोः पठनविषये निश्चिन्ता भविष्यामि। लतिका

पति:

प्रथमा दीक्षा : सम्भाषणम्

#### सः वा ?

कः/खलु/क्तवतु

पत्नी भवान् कदा आगतवान् ? पति: किमर्थं भो: तथा पुच्छति। इदानीमेव आगतवान। पत्नी रविशङ्कर: आगतवान् आसीत्। पति: कः सः रविशङ्करः ? पत्नी सः भवन्तं जानाति इति। पति: कः सः, न स्मरामि खल ? विशालनेत्र:, द्रष्टुं सुन्दर:, उन्नतोऽपि, श्वेतवर्णीय:। भवत: पत्नी विषये बहु-बहु श्लाघितवान्। तेन सह तौ द्वौ विदूषकौ इव स्तः खलु ? तौ अपि आगतवन्तौ। ते सर्वेऽपि भवन्तं बह् प्रशंसितवन्त । पति: तर्हि क: भो: तादृश:। तस्य नाम 'रविशङ्कर' इति स: एव उक्तवान् वा ? अथवा....भवती चिन्तितवती वा ? अन्यत् किम् उक्तवान् । तावदपि न जानामि वा ? अहं यत् वदामि तस्य सदा उपहासं पत्नी करोति भवान् । सः कविसम्मेलने मिलितवान् इति। तत्र भवत: सन्दर्शनमपि दूरदर्शने आयोजयामि इति उक्तवान् इति। अतः दिनाङ्कं निश्चेतुम् आगतवान् आसीत्। पति: स: वा ? किमर्थं हसति भो:। इदानीं वा ज्ञातवान् खलु। पत्नी पति: सः रविशङ्करः न भोः उमाशङ्करः। बहुकथकः, कार्यमेकमपि न साधयति। रविशङ्करो वा, उमाशङ्करो वा कोऽपि शङ्कर: एव खलु। पत्नी

अस्त्। अहं तेन सह वार्तां करिष्यामि।

## लोकहितं करोतु

#### स्मप्रयोगः

रामलालस्य पत्नी मृता इति। भवती जानाति वा ? विन्ता कदा भो:। तस्या: किम् अभवत् ? समेधा ह्यः सायङ्गाले मृतवती। तस्याः द्विनद्वयतः ज्वरः आसीत् इति। विन्ता ह्यः प्रातः आरभ्य हृदयवेदना इति वदति स्म। प्रायः तस्याः पति: अपि गृहे नासीत् इति। अहो कष्टम्.....। सा जलजा तु सम्यक् गायित स्म। बालान् सुमेधा अपि प्रीत्या पाठयति स्म। सर्वदा सौहार्देन व्यवहारं करोति स्म। एवं..... न भवेत् भो:..... किं कर्तुं शक्नुम:। सर्वं दैवलीला....। ललाटलिखिता रेखा। विन्ता जलजायाः समीपे कति विद्यार्थिनः पठन्ति स्म। जलजाया: समीपे चत्वारिंशत् बालिका: गच्छन्ति स्म। सा ता: सुमेधा सुमधुरं, सुललितं च पाठयति स्म। तथापि शुल्कम् अधिकं न स्वीकरोति स्म। तादृशा: जना: इदानीं विरला: भो:। किञ्चित् किमपि पाठियत्वा विन्ता अत्यधिकं स्वीकुर्वन्ति। अतः एव सा अधिकां वेदनां विना अनायासं मरणं प्राप्तवती समेधा स्यात्। सत्यम्। अतः एव वदन्ति-'यावत् जीवति तावत् सुकार्यं करोतु' विनुता इति।

## मित्रयोः सम्भाषणम्

अपेक्षया

मुकुन्द ! पठनं कथं प्रचलित ? कित विषयान् समापितवान्? प्रकाश: ह्यः द्वौ विषयौ समापितवान्। भवतः अपेक्षया मम पठनं न्यूनम् मुक्तुन्द: एव। पठने तावती आसिकत: नास्ति मम। पठनस्य अपेक्षया अधिकं लिखामि यत: स्मरणे तिष्ठति खलु ? मम गृहं ह्य: बान्धवा: आगतवन्त:। अत: अध्ययनस्य अपेक्षया प्रकाशः जल्पनम् अधिकम् अभवत्। इतिहासशिक्षकस्य अपेक्षया गणितशिक्षकम् अहम् इच्छामि। मुक्तुन्दः तस्य पाठनशैली सर्वेषाम् अपेक्षया उत्तमा। भवतां शिक्षकस्य अपेक्षया संस्कृतशिक्षिका रोचकतया पाठयति। प्रकाश: वयं तु तस्याः पाठनस्य निरीक्षां कर्मः। परं मुख्योपाध्याय: तु सर्वेषां अधिकम् उत्साहं, प्रेरणाञ्च मुक्तुन्द: पूरयति। केवलम् अध्ययनस्य अपेक्षया अन्येषु विषयेषु अपि प्रोत्साहं ददाति। अत: एव अन्येषां विद्यालयानाम् अपेक्षया अस्माकं विद्यालय: अत्युत्तम:, आदर्शभृत: च अस्ति।

### जनभाषा संस्कृतम्

तुमुन्⁄शक्नोति

पत्रकारः – संस्कृतभाषां जनभाषां कर्तुं भवन्तः प्रयत्नं कुर्वन्ति। एतेन फलं

दृष्टवन्तः वा भवन्तः ?

प्रबन्धकः – निश्चयेन एतस्य फलं सिद्धमेव। सर्वदा संस्कृतभाषया वक्तुम् अनेके इच्छन्ति। संस्कृतसरलम् इति जनाः जानन्ति। देशे संस्कृतं

पठितुम् उत्साहं दर्शयन्ति। सर्वत्र जनानां संस्कृतोन्मुखता,

संस्कृतस्य आदर: अधिक दृश्यते।

पत्रकारः - संस्कृत-आन्दोलनेन इतोऽपि किं सफलं जातम् ?

प्रबन्धकः – संस्कृतेन व्यवह्रियमाणानां संख्या अधिकाजाता। संस्कृतमेव

मातृभाषा अस्ति तादृशाः बालाः सन्ति। संस्कृते इतोऽपि अधिकानि नवीनानि साहित्यानि अपि मुद्रितानि। संस्कृतज्ञाः

अपि कार्ये आधिक्येन प्रवृत्ता:।

पत्रकारः – संस्कृतं वयं दशदिनेषु पाठयामः इति भवन्तः वदन्ति तत्

शक्यते वा ?

प्रबन्धकः - वयं दशदिनेषु एव संस्कृतपण्डितं न कुर्मः। तेषु संस्कृतोन्मुखतां

जनयामः। ते अनन्तरं शास्त्रपर्यन्तमपि पठन्ति।

पत्रकारः – भवतु, भवतां कार्यं यशस्वी भवतु। एतस्य प्रचारार्थं वयमपि

तदा तदा प्रसारयाम:। तेन अनेके जना: अत्र सम्पर्कं कर्तुं

शक्नुवन्ति।

### कार्यक्रमः

करोते: - प्रयोग:

प्रमुखः - अद्य कार्यक्रम: कथं भो:। क: क: किं किं करोति इति वदत्।

विशालः – आगच्छत् वदामि।

छात्राः - नमस्कारः श्रीमन् ।

विशालः - नमस्कारः। उपविशन्तु। एषा मधुरा, एषा अद्य प्रार्थनां गायति।

एतस्या: माता वीणां वादयति।

प्रमुखः - कार्यक्रमस्य निर्वहणं कः करोति...?

विशालः - कार्यक्रमस्य निर्वहणं विशालः करोति। एषः पञ्चमकक्ष्यायां

पठित। स्वानुभवं पद्मश्री वदित। सा एतस्याः कक्ष्यायाः प्रमुखा।

प्रास्ताविकं भवान् वदत्।

प्रमुखः – किं वदामि भो:.....। अस्तु चिन्तयामि। भवान् अपि सिद्धः

भवत्।

विशालः - एतौ द्वौ दूरवाणी-सम्भाषणं कुरुतः। एते द्वे बालिके विज्ञापिकां

कुरुत:। सः राजेशः एकपात्राभिनयं करोति। तौ किं कुरुतः

इति न जानामि।

प्रमुख: - पुच्छतु भो: भवन्तौ किं कुरुत: ?

वीरकः – आवां एकं ऐन्द्रजालं प्रदर्शयावः।

नन्दीश - मम मित्रं वन्दनार्पणं करोति।

प्रमुखः - भवतु। सर्वे मिलित्वा कार्यक्रमस्य यशस्विता यथा स्यात् तथा

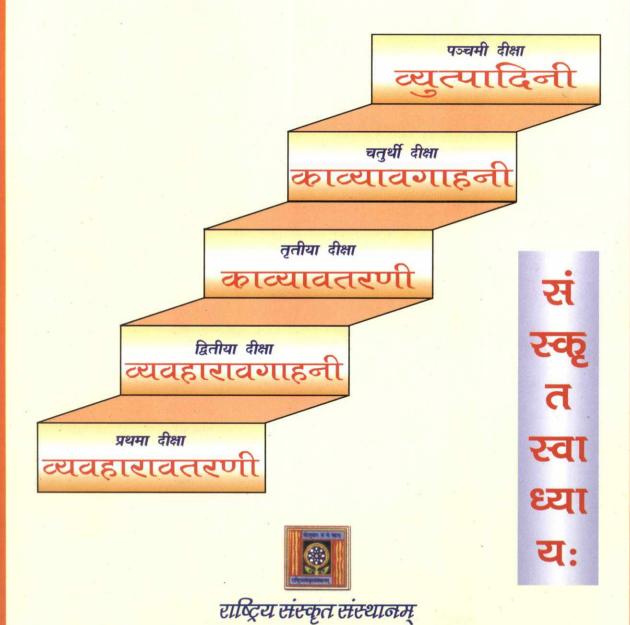
कुर्वन्तु।

## माता-पुत्रयोः सम्भाषणम्-II

क्तवा

प्रदीप ! दुग्धं पीतवान् वा ? माता नैव अम्ब ! तत्रैव अस्ति दुग्धम्। पुत्र: तर्हि दुग्धं पीत्वा पठत्। तात: स्नानं कृत्वा उपाहारं स्वीकरोति। माता तावता भवत: स्थानार्थम् अपि जलम् उष्णं भवति। तथैव करोमि अम्ब ! तात: शीघ्रं स्नानं कृत्वा कुत्र गच्छति ? पुत्र: अद्य रामनगरे सङ्गीत-कार्यक्रम: अस्ति इति। अत: तात: शीघ्रं माता स्नात्वा, पूजां कृत्वा, उपाहारं खादित्वा कार्यक्रमार्थं गच्छति इति। अम्ब ! अहमपि विद्यालयत: सायं विलम्बेन आगच्छामि। पुत्र: मित्रस्य जन्मिदनोत्सवः अस्ति। अतः विद्यालयतः मित्रस्य गृहं गत्वा, क्रीडित्वा, नृत्याभ्यासकक्ष्यामपि गत्वा गृहम् आगच्छामि। तर्हि अहमपि देवालयं गत्वा, सखीं मिलित्वा, सम्भाषणं माता कुत्वा आगच्छामि।

# **Teach Yourself Samskrit**



नव देहली